नो:
५०
कलपदार्थके विषे जेजेश्रछिद्रहें ॥ इनकों नमन
योग्यहें बरनको बुज जाकें द्विजराजरूपहोइ विलास
करतहें ॥ तहां आसंका करतहें जो द्विजको कहा
सन्मानकरतहें ॥ तहां कहतहें ॥ ५५ ॥ विप्रदारि
द्र्यदावाग्नि: ॥ विप्रको जा प्रकारको दारिद्र्यहें ॥ वाही
प्रकारके दावाग्निहें ॥ काहूकों विद्याको ॥ काहूकों
गुलको धनको वेद पढ़ज्ञानको भक्तिको ॥ पुरुषो
त्तम प्राप्तिको या प्रकारसों अनेक विधिको दारिद्र
हें ॥ सो वावापूर्ण भगो रूप करिकें व पूर्व अप्राप्ति
रूपदारिद्र्यको दाहकरतहें ॥ दाहनाम पाछें फेरकबहूं
दीसें नहीं ॥ याहूतें अधिकार्थ प्रकाश कलांमा
कहतहें ॥ ५६ ॥ नृदेवतानिलपूजक: ॥ नृदेव जो द्वि
ज अरु अग्नि तिनके पूजक आप किंचके बंदनक
रिवे योग्य होयके जो ॥ ब्राह्मणादिकको पूजन कर
तहें सो ॥ अपुनी अर्थ धर्महें ॥ तहां संदेह जो केव
ल पूजन मात्र ओकरतहें ॥ कै औरहू कछू ममत्वहें ॥
तहां कहतहें ॥ ५७ ॥ गोब्राह्मणप्राणरक्षापर: ॥ गाय
ब्राह्मण इनके प्राणताकी रक्षाके विषें तत्पर: लौ
किकवैदिकनपतें ॥ उत्तमप्रकारसों यथायोग्य पो
षण करिकें रक्षणकरतहें ॥ पूजनरक्षणादिक्रिया
त्मक धर्मकहें अब अंतर्वर्त्ति अलौकिक धर्मक
हतहें ॥ ५८ ॥ सत्यपरायण: ॥ जेसें भगवान सत्यसं
कल्पहें तेसें आपहूं सत्यपरायणहें ॥ सत्यवक्ता स
त्य कर्ता सत्य मुक्ता सत्य दाता ॥ सकललक्षिसत्यहें
याहीतें बेदमारगको अंगीकारहूं सत्यहें ॥ सोजताय
बेकों आगें नाम कहतहें ॥ ५९ ॥ प्रियश्रुतिपथ: श्रु

त॰ ॥ श्रुतिजो वेद तिनमें जो मार्ग वतायो ॥ ता विषें
हू आपको प्रा स्तिहें नित्य कर्मादिक करिकें अंत
गतिजो रसात्मक पुष्टि मार्ग ताकी रक्षा करतहें ॥ या
हीतें वेदोक्त जो यज्ञादिक करतहें ॥ सो नाम कहत
हें ॥ ई॰ ॥ महामखकृत् ॥ महा वडे जो यज्ञ ॥ ताकों वेदो
क्त प्रकारसों करतहें ॥ तहां संदेह होइ जो ॥ वेदो
क्त जो मर्यादा मार्ग ॥ पुष्टि भक्ति मार्गको तो वहुत
भेदहें ॥ पुष्टि मार्ग भूषणं ॥ तन्मर्यादा मार्ग दूषणं
॥ मर्यादा मारग भूषणं तत्पुष्टि मार्ग दूषणं एसो वि
षमताहें ॥ सो दोऊ मार्ग एकठोर कैसें संभवें ॥ तहां
कहतहें ॥ ई॰ १ ॥ प्रभु ॥ सर्व समर्थ हें ॥ मर्यादा मार्ग
भक्तिको पुष्टिके विषें स्थापन करायवे
की सक्ति वहुतहें ॥ तहांको कहतहें ॥ सो एसें महानुभाव
कोंको नपावें ॥ सो कहतहें ॥ ई॰ ॥ रसानुग्रहसं
लभ्यः ॥ जाको पुष्टि रसकों संपूर्ण अनुग्रह
होय ॥ एसो जो भक्तहें ॥ ताकों पायवेको योग्यहें ॥ श्री
रसके अनुग्रह विना कोटि कल्पमें हूं इनकों नजा
नें ॥ अरु श्री विठ्ठलेश्वरके केवल अनुग्रह विना
॥ कोटि कल्पमें हूं श्री रसकी जो लामें प्रवेश नहो
इ ॥ तहां संदेह होय जो जीवलो दोषलिप्त हें ॥ सो कै
वल भक्त होइ ॥ और कवे आपकों जानें ॥ तहां कहतहें ॥
ई३ ॥ महापतितपावनः ॥ महापतित जो दोषकों सर
मुद्र ॥ ताकों पावन करतहें केवल शरणमात्रतें दोषनि
वर्त्तिकरि ॥ उत्तम भक्तकी पदवी देकें जो लामें प्रवेश
करावें ॥ ताकों पावन कहियतुहें ॥ तहां संदेह जो ॥ शर
णागम नतें पूर्वजा वकी कोंन अवस्था हती ॥ और अब

ना:
६
कौनगतिकों पावतहैं ॥ तहां कहतहैं ॥ ३४ ॥ अ
नेकमार्गसंक्लिष्टजीवस्वास्थ्यप्रदः ॥ कर्मयोगज्ञ
पासनादिकमार्गनिविषें भ्रमत भ्रमत अत्यंतक्लेश
कौंप्राप्तभए ॥ जेजीवताकोंशरनागतकरिस्वास्थ्यजो
जहांकेजीवजहांतें बिछुरेहैं वाहीस्थलकीप्राप्तिमा
कौंदानकरतहैं तबवेजीवस्वास्थ्यहोतहैं ॥ संदेहजो
एकशरनमात्रतें इतनोंदानकरतहैं ॥ सोतोवडोआ
श्चर्यहै ॥ तहांकहतहैं ॥ ३५ ॥ महानुः ॥ जेवडेईश्वर
हैं तिनकोस्वभाविकधर्महै ॥ अपनोमहत्वदेखिकें
कृपाकरें ॥ संदेहजे अनेकमार्गनिविषेंरमणकस्योहैं
॥ सोअनेकवचनकरिकें अनेकशास्त्रनकरिभ्रांतजो
ग्रहस्तहैं सोकैसेंस्वास्थ्यहोय ॥ तहांकहतहैं ॥ ३६ ॥ ना
नाभ्रमनिराकर्त्ता ॥ सब [illegible]को पोसणकरिकें ना
नाप्रकारकीभ्रांतिकोंदूरकरतहैं ॥ तहांसंशयजोना
तिनादूरकरतचित्तकोनाबात्मकसेवाकोंतो
अज्ञानहै ॥ सोयथार्थसेवाविनाप्रसन्नहोइन
हीं ॥ तहांकहतहैं ॥ ३७ ॥ भक्ताज्ञानविदुतमः ॥ अज्ञा
ननेदनकेविध्वंसनउत्तमहैं ॥ कायकवाचकीकमा
नसिक ए त्रिविधअज्ञानहैं ॥ ताकोंनिवर्त्तकरिपुर
षोत्तमसंतोषजनकयथार्थसेवाकोज्ञानदानदेत
हैं ॥ तहांआसंकाजो ॥ औरमनुष्यमिश्रितआपरह
तहैं ॥ सोकैसेंपहिचांनेजाय ॥ तहांकहतहैं ॥ ३८ ॥ म
हापुरुषसतरव्यातिः ॥ महापुरुषजोकेवलईश्वरता
हैं ॥ उत्तमप्रकारसोंविख्यातजाकीस्वमार्गीअन्यमा
र्गीः ॥ ब्रह्मादिकपर्यंतसबकोंईईश्वरकरिजानतहैं
कोउकहैगोजो ॥ औरहूधनवांनगुनवांनवहुतविख्या

तहे॥ताहूंकों आधिककरिमानतहे॥ताही यावि से षट
कहो॥तहांकहतहे॥६९॥महापुरषविग्रहः॥अतिअ
लौकिकहे श्री अंग जाको दर्शनमात्रते दोषदूरिहोय
॥औरपुरषोत्तममें प्रतीत आपतें होइ याहीतें आगे
लोनांमदर्शनको मुख्यता कहतहे॥७०॥दर्शनीयतमः
॥मनुष्यदेवतासर्व॥प्रभृतिसबनको अतियोग्य
हें दर्शनजाको दर्शनमात्रतें सकलमनोरथसार्थक
होतहे॥स्वरूपाधिकताकही परंतुबालीके विषें अ
धिकताकहोहे॥तहांकहतहे॥७१॥वाग्मी॥बोली
के विषें कोई एक अलौकिकमधुरतामृतरससागर
तरंगकल्लोलकरतहे॥बेंतरंगसों करिजनके मन
लीलामृतसागरमें निमग्नकरतहे॥तहांसंदेहजोत
रंगहेसो ताकछूपदारथकों नीतकी जातहे॥तेसेंक
छूअप्रयोजकवस्तुको बाहिर फेंकिदेतहे॥तेसेंह्यांक
हांदूरिकरतहें॥तहांकहतहे॥७२॥मायावादिनिरा
सकृत॥सबशास्त्रसिद्धांतमयमधुरवांणीकरि माया
वादीकों निरासकरिकें निरंतरकरि मायावादीरूपी
जोश्रुषेकाघताकों तरंगकरि दूरिफेंकिदेतहे॥तहां
संदेहहोइजोनानाप्रकारसोंवादकरतहें॥तोउदासर
हतहोइगो॥तहांकहतहे॥७३॥सदाप्रसन्नवदनः॥
निरंतरप्रसन्नतायुक्तहें श्रीमुखकमलजाको॥उदा
सताकोलेश क्षणमात्रहूं कबहूं आवतनहीं॥अलौकि
क आनंदमयतासदारहतहे॥ताकोकहालक्षणहे॥त
हांकहतहे॥७४॥मुग्धस्मितमुखांबुजः॥मुग्धअनू
नूपमसुंदरभगवतलीलास्मारक स्मितयुक्तहें श्री
मुखपंकजजाकरि भक्तकों स्मितकरिकें स्वस्वरूपा

ना॰ सत्तकरतहैं ॥ तहांसंदेहजो कैसें भक्तको करतहैं ॥ त
१० होकहतहैं ॥ ७५ ॥ प्रेमाइदुखिसालाह्ल ॥ स्वविषयि
कजे प्रेमताकरिकें सजलहैं नेत्र जाके ॥ ऐसे जो भक्त
तापर कृपा दृष्टिहै जाकी भूतलके विषे विराजकें भू
तलस्थ भक्तको स्वस्थान प्राप्तकरावतहैं ॥ तहांकोउ
कहैगो जो आप ॥ वैकुंठनिवासी प्रथवीके विषेकें
सें सोभितहोइंगे ॥ तहांकहतहैं ॥ ७६ ॥ क्षितिमंडलमं
डन: ॥ क्षितिजो प्रथवी ताको मंडलसंपूर्ण भूतलके
भूषण ॥ जैसेंकोउ आभूषणधरें ॥ सो आभूषण उ
नकें सर्वांगको सोभादेतसोतो आपसोभातहैं ॥ तैसे
श्री गुसांईजी आप भूषणको नाईं भूतलस्थकोंसो
भादेतसोतो आप अप्रतिम सोभातें तहांसंन्याय जो ॥
आभूषणमें मणिहैं ताकी कांतितो सब ओर प्रसर
तहोतहैं ॥ ताइसकें कांतिकहां व्यापितहैं ॥ तहांकह
तहैं ॥ ७७ ॥ त्रैलोक्यव्यापसत्कीर्त्तिः ॥ त्रिलोकमेंव्या
पीहै उत्तमकीर्त्ति जाकी कीर्त्ति सोई कांति जगतप
दकहेसो ॥ सात्विक: ॥ राजस तामस ॥ जोलीला सृष्टि
ताविषें व्यापी है ॥ सत् प्राणनाथ संगसुरतसंग्राम
जपात्मक कीर्त्तिजाकी ॥ कीर्त्तिको व्यापकत्वकह्यो
और कार्य कहतहैं ॥ ७८ ॥ धवलीकृतमेचक: ॥ उज्व
लकीनेहैं ग्रामपदारथ जाने ॥ सदोषसंसारसंबं
धकरिवायकें ॥ अलौकिक उज्वलकीने संसारीजी
वको आपकें विषे निरोधकरिकें उज्वल भक्तकीनें ॥
तहां संदेह जो कोन प्रकारसो धवलीकीनें ॥ तहांकह
तहैं ॥ ७९ ॥ वाकसुधाकृष्टभक्तांतकरण: ॥ बचन
रूपीजो अलौकिक अमृत ॥ ताकरिकें आकर्षनकीनें

नहें भक्तके अंतः करण जाने ॥ लौकिकव्यासंगनि
बारिकें स्वस्वरूपमें निरोधकरतहें तहां संदेह होय
जो अंतःकरणमें तो कामक्रोधलोभमोहादिक अ
नेक सत्रु प्रबलहें ॥ सो स्वरूपमें निरोधकेसें होइ ॥ बे
दबें ॥ तहां कहतहें ॥ ८० ॥ शत्रुतापनः ॥ कामादिशत्रु
कोतापनदाहकरनसमर्थ ॥ तबसंदेहजो कामादि
शत्रु निवृत्ति पूर्वक निरोध भए पाछें अलौकिकम
नोरथहोइ सो पूर्ण कैसें होइ ॥ तहां कहतहें ॥ ८१ ॥ भक्त
संप्रार्थितकरः ॥ निजभक्त जोजो उत्तम प्रार्थना करत
हें ॥ सो सब पूर्ण करतहें ॥ तहां संसय जो अंतरंग
उत्तमाधिकारी ॥ दासदासी हें सो तो प्रार्थना करत
नाहीं ॥ और प्राणनाथ सब सुपद छातेहें ॥ तब
बाकों कैसें होई ॥ तहां कहतहें ॥ ८२ ॥ दासदासीसोत
पदः ॥ दासदासी कोइ बिन प्रार्थना अंतरकी जो
निके उत्तम प्रकार सोंदेतहें ॥ प्र उपसर्ग हें ॥ सो याको
अर्थ जो इच्छा केसेवाकी होइ वाकों कोई कोटिमु
हरदेवें तसें ह्या आप चिंततें अप्रति अपरमित देत
हें ॥ याहीतें दूसरो नाम कहतहें ॥ ८३ ॥ अचिंत्यमहि
मामेयः ॥ जाकी महिमा चिंतनमें काहूंकों आवतन
हीं ब्रह्ममहेंद्रादि देवनके चिंतनमें आवतनहीं ॥ याही
तें महदाश्चर्य ताको ज्ञापक नाम कहतहें ॥ ८४ ॥ विस्म
यास्पद विग्रहः ॥ विस्मयः ॥ आश्चर्यकों आस्पदः आ
लयहें ॥ श्रीअंग जाको ॥ महिमा दया तुला उदारता अ
लौकिकता प्रभृत धर्मधर्मीकों देखिदेखि सुरनरमुनि
ली जास्य प्रभृतिको विस्मयही होतहें ॥ कदाचित दैव
नतस्वकीयकों खेदहोइ ॥ तबकैसें निवर्त होय तहां

ना: कहतहें ८५ ॥ भक्तक्लेशासहः ॥ भक्तकौं त्रिविधक्लेश हें
११ ताकौं सहि सकत नहीं ॥ जो तनकतें सेवाविषें देहादि
कलौकिक प्रतिबंध अध्यात्मिक तो अतिकहूं सेवा
करत अपराध पडें प्रभू खेद पावें ॥ आधिदैविक आ
पकौं श्री नावादिक रमण करि प्राणनाथकौं सुखो
त्पत्तिक बहोइ ॥ संदेह जो जैसें जे याकौं सहें नहीं तें
सें आप सहि सकें नहीं एसो और हूं चरित्र भक्तकें वि
षें होइगो ॥ तहां कहतहें ८६ ॥ सर्वसहः ॥ भक्तके विषें
जो गुणदोषादिक हें ॥ सो सब सहनसील कवहूं उदा
सी होत ही नहीं बस्तुतस्तु प्रसन्न ही रहइ हें ॥ तातें प्रस
न्नतो ज्ञापक नाम कहतहें ८७ ॥ [illegible] लतेबत्रा ॥ निज
भक्तकी वृत्तिमात्रके विषें [illegible] उत्साह सो बसही हें
॥ संदेह जो कोऊ [illegible] गांमकौ राजा हें वाकौं कौ
तुको डोसो [illegible] देखतो वाके मनमें आवें न
हीं ॥ तसें [illegible] घोडेमें बज्रा होतहें ॥ तहां कह
तहें ८८ ॥ श्री चार्यरत्न ॥ केवल रसात्मक आनंद
मात्र कर पाद मुखोदरादि पुरुषोत्तमकें श्री मुख जो
श्री मदाचार्य तिनकें तनुजतामें रत्नरूप एसें जनए
नज्ञावी पुरुषोत्तम श्री मदाचार्यजी तिनकौं रत्नर
क्षण करिवे योग्य आचार्य जे ॥ और आचार्य तिन
में रत्न लेसें सुवर्ण मध्यें रत्न लेतें सें और मार्गके आचा
र्यनतें कोटिशः अधिक हें ॥ यह हीतें अधिक सामर्थ्य
हें सो कहतहें ८९ ॥ सर्वानुग्रहकृन्मंत्रवितमः ॥ भग
वान आपसा हाल पुच कुंदकौं दर्शन दिएवातें प्रार्थ
नाहूं करे ॥ तथा स्वमुक्तिदानमें जन्मांतर विलंब भयो
हो तुरत सबनकौं साधन विना प्रार्थना करे बिना

मुक्तितेंकोटिशः ॥ अधिकजो अनुग्रहकर्त्ता मंत्रके
ज्ञाता आपही तें दानकर्त्ता यामें संदेह नो ॥ महामं-
त्रोपदेशक रिकें कहां फलदान करत हैं ॥ तहां कहत हैं
८९ ॥ सर्वस्वदानकुशलः सर्वस्व प्राणी को अधिक-
प्राणनाथ को स्वरूपास्वाद दानके विषें कुशल ॥ अ-
थवा सर्वस्व जो प्राणनाथ तिनको केलिके विषें सुरत
संग्रामबंध विसेष करि विलक्षण सुखदानके विषें कु-
शल याही तें रसोदीपक गांन निपुनता सें पादकनाम
कहत हैं ॥ ९१ ॥ गीतसंगीतसागरः ॥ संगीतसास्त्रोक्त प्र-
कारभेदः ॥ स्वरग्राममूर्छनातालप्रभृति सकल भेदके
विषें संस्कृत प्रबंध गांनके लिये सागर अपार जी ला
विषें प्राणनाथके समान [illegible] रस अनुसंधान क-
रिकें समानरसीलता सं [illegible] नाम कहत हैं ॥ ९२ ॥ गोव-
र्द्धनाचलसखः ॥ श्रीगोवर्द्धनपर्वतके विषें अचल अ-
खंड हैं लीला जाकी ॥ ऐसे जो लीला विसेष श्री गोवर्द्धन
धरताके सखा समान [illegible] लेपुसख्यं ॥ अथवा श्री गो-
वर्द्धन पर्वतके सखा श्री गिरराज द्वारा पुलिंदी प्रभृती
कों अंगीकारलें सें आप द्वारा और अनेक भक्तकों अं-
गीकार अथवा श्री गिरराज भीतर अनंत प्रकार सों क्री-
डा करत हैं ॥ सो आपके हृदय भीतर प्राणनाथ विहार
करत हैं ॥ तासें समानस्वभाव करिकें सखा ॥ याही तें श्री
गोवर्द्धन विषें विहार संबंधी जे हैं ॥ ताकें ऊपर स्नेह सू-
चक नाम कहत हैं ॥ ९३ ॥ गोपगोपिकाप्रियः ॥ गोचा-
रणद्वाक पृमत्ति गोपसों निकुंजमें आगोपिकासों गि-
र पर विहार करत हैं ॥ प्राणनाथ कि ए विहारसों मिश्री
हें ॥ तातें अत्यंतप्रिय हैं ॥ प्राणेश्वरें स्थिति सकल ध्र-

ना: ११२

यहै ॥ संदेह जो ॥ भगवदीच्छित के से जांनत होइगो ॥
तहां कहत हैं ॥ ८४ ॥ चिंतितज्ञः ॥ प्राणेश्वर जा जीवा
कौ जा भक्त को जा पदार्थ कौ चिंतन स्मरण मात्र करें
ताहि कौ आप बिना आपें जा कि ए जांनें ॥ जांनत मात्र
संपादन करें ॥ संपादन उपयोगी अति अलौकिक
माति पूर्णतास्थापक नाम कहत हैं ॥ ८५ ॥ महाबुद्धिः ॥
महत अप्रमित अलौकिक तम निजवल्लभसंतोषका
रणरूप है ॥ बुद्धि जाकी महाबुद्धि करिकें महाकार्य कि
ए ॥ तातें विश्वकर्तार्थता जनक नाम कहत हैं ॥ ८६ ॥ ज
गद्वंद्यपदांबुजः ॥ जगत अलौकिक कौं वंदन करिवे यो
ग्य है चरणकमल जाके अगांग जानत पुष्टिभृत्तिनकौं
वंदन करिवे सेवन करिवे योग्य है ॥ पदांबुज जाके
॥ सकल सृष्टि सबवंध्य करत हैं ॥ ताकौ कारण कहो ॥ ८७ ॥
जगदाश्चर्यरसार्णवः ॥ जगत कौं सकल सृष्टि कौं आ
श्चर्य रस पुरुषोत्तम संबंधी अपूर्वतर ॥ अति विलक्ष
ण तम रस को दायक है ॥ तातें सबन कौ विसेष सेव
नकौ योग्य चरण जाकौं ॥ तैसें भक्त कौं प्रीति विषय आ
प है ॥ तैसें आपकौं प्रीति विषय कहा है ॥ तहां कहत हैं
॥ ८८ ॥ सदाल्तमकथारतिः ॥ सर्वदा श्री लसकें निकुं
ज विषै स्वामिनी मंडल मध्यगत विविध चरित्रता
की कथारस पांन ॥ भक्त कौं दांन ता विषें रति जाकौ ॥ क
थाप्राप्ति कौं विषय है ॥ ए आसंका जो और रुतिः ॥ क
थासे वा विना की लोक की नाई है ॥ सो लोकवत फलकी
जनक होइगी ॥ तहां कहत हैं ॥ ८९ ॥ सुखोदर्कफलतिः ॥
पुरुषोत्तम सेवन रसात्मकः ॥ विहारात्मक जो सुख
है उत्तर फल जाकौ ॥ ऐसी है संपूर्ण कृति जाकी अर्पी

र्थ ॥ लोकवत सकल कृतिहैं ॥ ता अलौकिक फलत
नकहै ॥ तहां एआसा कारहै जो ॥ अलौकिक कृतिहैं
॥ सोतो अलौकिक फलतनक होइ ॥ परंतु लोकवत
कृति अलौकिक फलतनक वैसें होइ ॥ एसंदेह होइ
तहां कहतहैं ॥ १०० ॥ सर्वसंदेहछेददक्षिण ॥ प्रथम
कह्योजो संदेह ॥ ताके छेदनके विषे दक्षिण चतुर
औरहू जोजो प्रकारको संदेह ॥ ताकों दूरिकरण सम
र्थ कोई कहैंगो जो ॥ औरवचनकरिकें संदेह छेद
नकियो ॥ तातें कछू स्वमार्गस्थापनता सिद्धनहोइ
अपनो पक्षरहै नहीं ॥ तहां कहतहैं ॥ १०१ ॥ स्वपक्ष
रक्षणेदक्ष ॥ स्वभक्तिमार्गीयपक्ष ताकों भक्तिमार्
गीयसाक्षकरि रक्षाकरणचतुर ॥ भक्तिविरोधी अ
न्यसास्त्रहैं ॥ वातें स्वपक्षकी रक्षाकरतहैं ॥ संदेहजो
परपक्षहूं समर्थहै ॥ सोतोनीतिः ॥ स्वपक्षकों खंडनक
रे ॥ तबतहां कहतहैं ॥ १०२ ॥ सतिपक्षक्षयंकरः ॥ प
रपक्षमात्रके ... ॥ ताकों क्षय नास भयो सोकव
हूं समर्थ होय नहीं ॥ संदेहजो प्रक्षिप्त पक्ष पूर्वक स्व
पक्षरक्षण करतहैं ॥ सो स्वपक्षमें कह्या सिद्धांतहैं
॥ तहां कहतहैं ॥ १०३ ॥ गोपिकाविरहाविष्ट ॥ श्रीगो
पीजनकों श्री प्राणनाथके संग संयोगोत्तर विप्र
योगकें विषें विरहरसहै ॥ सो सिद्धांतहै ॥ उनकरि
कें आविष्टहैं ॥ एतन्मार्ग विषें विरहहै सो फल
लहैं ॥ संयोगमें तात्कालिक सुख विरहमें सर्वली
लाकों एककाल अवधनसुखः ॥ संदेहजो श्रीगोकु
पिकाधीसाको विरहकरि एसें आविष्ट क्यों है
लहैं ॥ तहां कहतहैं ॥ १०४ ॥ लसात्मा श्रीहैंस

ना: हैं आत्मा जाके आत्मा के विषें अत्यंत स्नेह स्वजाति
१३ क होइ ॥ जहां स्नेह तहां वियोग वियोग तहां विरह
॥ अत्यंत स्नेह के नर सो संजोग हैं में हूं विरह होत हैं ॥
अथवा लक्ष्मा माल स्वकी आत्मा श्री लसको अत्यंत
बल्लभ ॥ संदेह जो आत्मा ताको लक्षण कहा है ॥ तहां
कहत हैं ॥ १०५ ॥ स्वसमर्पकः ॥ स्व आपस्वकी य सर्व
स्व प्राण ताको समर्पण किए ॥ याही ते ॥ नाम कहत हैं
॥ १०६ ॥ निवेदनक्ति सर्वस्वं जेमनक वंदते स्वसर्वस्व
निवेदन की नेह हैं एसें नंद के सर्वस्वरूप प्राणको आधि
क प्रियः ॥ अथवा निवेदिक हैं ॥ सर्वस्व जाते ॥ सर्व
स्व जाते ॥ सर्वस्व जो श्री व्रजभक्तजा नवल्लभ ताके
विसें निवेदन हट ता स्वरूप कहत हैं ॥ संदेह जो ॥ नि
वेदीक सर्वस्व है तो ताको निवेदन अधिकार हें न
हीं ताकी कहा गति ॥ ताको कहत हैं ॥ १०७ ॥ शरण ध्वर
प्रदर्शकः ॥ निवे दन अधिकार रहित हैं ताको अपनो
पुष्टि शरण मार्ग हैं ॥ सो उत्तम प्रकार सों दिखावत हैं
एसें अनेक प्रकार की सुलभता कही ॥ अब दुर्लभता
श्री स्वामिनी जी सहित श्री लसको
कहत हैं ॥ १०८ ॥ पदांबुज जा
अनुग्रह लक्ष्यो केवल प्रार्थना योग्य हैं ॥ पदांबुज
कें ॥ केवल पुरषोत्तम के संपूर्ण अनुग्रह बिना ॥ ब्र
ह्मादिकन की हूं ॥ चरणांबुज प्रार्थना की योग्यता
नहीं ॥ तातें पुरषोत्तम तें हूं अति अगाधता श्री गुसां
ईजी की कही ॥ याही तें इनके नामोच्चारण को फल कह
तहें ॥ १०९ ॥ इमानीति ॥ एजो कहें ॥ सो नाम रूपा रत्ना
॥ ताको श्री विठ्ठल चरणांबुज को ध्यान करिकें तदेक
शरण होत सोतो जो पठे सो हरिजो आर्ति हर प्रभुता

कोंपावें ॥ एतनपदकहें ॥ सोबहुत पतनकें अर्थचरन
धर्मकहें ॥ सोऐध्यांन शरणगत निलांमस्वस्तपात्म
क ताकोंनपावें ॥ हरिपदयातें जोनांमपाठकरिवें
वारकोंसुखप्राप्ति विलंबसदुन्नाकेंनही ॥ यांमेंफल
कह्यो अबफलरसपांनकहतहें ॥ यद्यन्मनस्य
ति ॥ प्रभूप्राप्तिउपरांतजोजो मनोरथ मनमें धार
नकरें सोसुखपावें निश्चय जो जाविखें विशेषप्र
कारकें रसांनुभवबाधेइछाहोइ ॥ सोसिद्धिहोइ ॥
॥ अबस्तोत्रकर्ता प्रार्थनाकरतहें ॥ नांमरत्नेति ॥ नां
मरत्नाहें अविद्याजाको [illegible] यह स्तोत्रताकों
जोसुबुद्धिपठे ॥ ताकों[illegible] अपनोंकरो ॥ ऐसी
मेरीप्रार्थनाकरिकें [illegible] जपकहतहें ॥ श्री
विठ्ठलेति: ॥ श्रीविठ्ठलकेपदांबुजकोमकरंद ॥
कोसबनकुर्ता ॥ जोश्रीरघुनाथजी तिनकीजो
यहकृति सोश्रीविठ्ठल करिकें जपकोकरतहें निरं
तर ॥ यदुक्तंकृत्वेनेनेदं रूपया विठ्ठलप्रभोः ॥
॥ ततयातस्यसर्वबेफलरूपं भविष्यति ॥ १ ॥ इ
तिश्रीरघुनाथोक्तनामरत्नविवरणंसं
पूर्णम: ॥

श्रीकृष्णाय नमः॥ अथ सातो स्वरूपन की भावना को विचा
र गुसांई लिखत हैं॥ स्वरूप भावना को आशय यह है जो श्रीजी
आदि अष्ट स्वरूपाय जो पदारथ॥ और उनकी गोद कूं के छ
स्वरूपकें भाव विचारनो॥ तहां प्रथम श्रीजी के स्वरूप की भा
वना या भांति सो करनी जो निबंध के मंगलाचरण में श्री
महाप्रभुजीनें कह्यो हैं॥ नमो भगवते तस्मै कृष्णायाद्भुतक
र्मणे॥ नामरूप विभेदेन जगत्क्रीडति यो यत॥ १॥ जगत के
विषे पुरुषोत्तम की क्रीडा दोय भांति की है॥ आगम्य समें तो
स्वरूपात्मक क्रीडा॥ और परोक्ष समें तो नामात्मक क्रीडा त
हां श्रीजी आप साक्षात् लीलात्मक स्वरूपात्म कें प्रगट हो
यकें स्वरूपात्मक लीला कीये॥ और श्रीभागवत पुस्तक
नामलीलात्मक स्वरूप॥ तहां प्रथम स्कंध द्वितीय स्कंध उ
भय चरणारविंद हैं॥ तृतीय स्कंध चतुर्थ स्कंध उर हैं॥ पंच
म स्कंध षष्ठम स्कंध भुजा हैं॥ सप्तम स्कंध दक्षिण श्रीहस्त
अष्टम स्कंध नवम स्कंध स्तन भाग हैं॥ दसम स्कंध हृद
य हैं एकादस स्कंध श्रीमस्तक हैं॥ द्वादस स्कंध वाम श्रीह
स्त या भांति सो श्रीभागवत सो नामात्मक स्वरूप हैं सो वि
चारिये अब श्रीजी के स्वरूप को दर्सन करत हैं॥ तहां दक्षि
ण श्रीहस्त की मुठी बांधि कें अपने ही कटि ऊपर राखे हैं औ
र अंगुष्ट को प्रसंद दर्सन करावत हैं॥ सो भक्तन के मन
को आकर्षण करि मुठी बांधि॥ वाम श्रीहस्त ऊंचो करिकें भ
क्तन कों आकर्षण करि निकट बुलावत हैं॥ सो वे सानिध्य
आयकें प्रार्थना करत हैं॥ महाराज हमारे मन जो आकर्षण
कीये हैं सो फेरि देऊ॥ तब प्रफुल्लितास्मित युत मुखारविंद
सों दक्षिण श्रीहस्त कों अंगुष्ट दिखावत हैं सो यह लेऊ श्लो

क ॥ दक्षिणेन करेण सो मुष्टिकृत्य मनासिन ॥ वामं करं समु
द्धृत्य निन्हूते पस्य चातुरी ॥१॥ इति च ॥ और ही निकुंज के द्वार
के बीच ठाढे हैं ॥ सो सो ऊभ भक्तन के आकर्षणार्थ ही ठाढे हैं
और या भांति सों वाम हस्त ऊंचो करि के भक्तन कों बुलावत हैं
सो निकुंज द्वार के मध्य ठाढे तें श्री हस्त कों स्पर्श भयो है ॥ और पी
ठि के ठु रूं और रहे श्री स्वामिनी जी के स्वरूप हें ॥ तिनकों गोपना
र्थ आच्छादनार्थ ॥ ताही के ऊपर ओढनी ओढत हैं ॥ और पीठ
कचोर सहें ॥ सो तो या ही के लीये जो री ऊ और दोय स्वरूप
हैं ॥ और श्री स्वामिनी जी की दृष्टि जो सनमुख हैं ॥ ताकौ भा
व यह है जो प्रभु की दृष्टि पांच प्रकार की हैं ऊंची दृष्टि सो
तो स्त्री पुरुष द्वंद्वन के अनुग्रहार्थ सें ॥ और सनमुख
दृष्टि सो चेतन अचेतन सबन के अनुग्रहार्थ ॥ तातें श्री
जी की दृष्टि सनमुख ताही तें है ॥ जो चेतन जीव अचेतन
जो वृक्षादिक सबन कों अनुग्रह सो तो भ्रमे यव लही तें क
रनो हैं ॥ यह श्रीजी को भाव हें ॥ अब श्री नवनीतप्रियजी के
स्वरूप को विचार ॥ इनकों तो बालभाव ही मुख्य हें ॥ तातें प्र
माण प्रकरण की लीला प्रगट हें ॥ और प्रकरण की लीला
तो गुप्त हें ॥ दशमस्कंध के आरंभ तें सो चारि अध्याय तांई
सो जन्म प्रकरण कहीये ॥ तामे प्रभु नें पांच वर्ष की वयतां
ई कुंवार लीला कों अंगीकार कीये ॥ सो श्री नवनीतप्रिय
जी को स्वरूप हें ॥ अत एव गुप्त रस ग्रंथ के सब प्रकार हें सो
तो बालभाव यामें ही हें ॥ बाल अवस्था में निरावृत्य स्वरू
प सो केवल रासाध्याय क संपूर्ण रस के पात्र रूप हें या
ही तें तनियां धोती सूथन काछनी नहीं पहरे हें ॥ श्लोक
आनितं परमं तत्त्वं यशोदोत्संगलालितं ॥ तदन्यदिति

प्राकृतासुरास्तानहोवुधा । १ । औरश्रीहस्तमेंनवनीतहें
ताकोंअभिप्राययहहेजोठाकुरजीवेंनुनादकरिकेंगाय
नकेंविषेंसुधाकोजोस्थापनकीयोहें । श्लोक । गावश्च
कृष्णमुखनिर्गतवेणुगीतपीयूषमुत्तभितकर्णपुटैःपि
वंत्य । इति । तहांगायतेंदूधप्रगटहोयकेंताकोंसारभू
तजोनवनीतताकोंनिकस्योसोतोसुधाहीहें । ताकोंअपने
हाथमेंराषिवेकोंतात्पर्ययहहेजो । कछुसामिश्रीसुधा
संबंधीविनाभगवदभोग्यकेयोग्यनांही । काहेतेंजोसुधा
सोतोसिंगाररसात्मकभगवत्स्वरूपकोसारभूतसोइस
रेस्वरूपकोप्रागट्यहें । सोदक्षिणश्रीहस्तमेंराख्योहें । ता
केस्पर्शतेंसवसामग्रीभोग्यहोयगईतहें । औरवालली
लाहूकेसवप्रकारइनहीकेंविचारीये । सोईयाकीर्त्तनमेंक
होहें । रा वि ब ... कोमिश्रीकरनवनीतलीयें । यहप्र
कारसवइनहीकेंस्वरूपसेप्रगटहें । औरवाललीलाहीमें
प्रौढलीलाकेप्रकारसववीचारीये । श्रीभागवतकेंप्रमा
णप्रकरणमेंकहेहें । ताकोअर्थ । यहजोअंगानकेदरस
नयोग्यजोकवारलीला । इहांअंगनाशब्दकोअर्थय
हजो । अंगसोंअंगमिलावें । ताकोंनांउअंगनाकहीयें । ते
तोयाश्लोककेंअभिप्रायतें । यहसूचनभयोजो । कुंवार
वयमेंभक्तनकेंअंगअंगकेविनियोगभगवदर्थसेंग
सोंहें । भक्तअहनिसठाकुरकेंकुंवारवयमेंऊरसनि
मग्नहें । औरप्रभुकुमारहे । सोप्रभुकुमारकोअर्थपठ
जोतुवहें । मारजोकामजिनकेंआगेंअतएवप्रकरण
केप्रथमाध्यायकीलीलाप्रगटहे । औरप्रकरणकीली
लातोगुप्तहें । सोमदनगोपालनामकहीयतहे । यातें

स्वरू· पहीसिधांतभयोजोकुमारवयमेंकेवलरसात्मकलीला
५४ कहीहे। ओरकुमारवयमेंयहविशेषजोसहजहीमेंहेरस
कीप्राप्ति। ओरलीलाकोंगोपनहोतहे। यहश्रीनवनीत
प्रियजीकोस्वरूपपूर्ण। अवश्रीमथुरेशजीकेस्वरूपको
विचार। यनकेस्वरूपमेंप्रमेयप्रकरणसोंपंचदसअ
ध्यातेंलेकेजो। इकीसअध्यायताईवेणुगीतकेंअध्या
यताई तामेंप्रभुजीपोगंडवयकोंआश्रयकरिगोचारणा
र्थवनमेंपधारिअनेकभांतिकीक्रीडाकीये। ततश्चपौ
गंडवयः श्रितौव्रजेव्रजे इति। तहांआसंकाउत्पन्नहोय
जोव्रजमेंश्रीनंदरायकुमारतोवेहीजनहें। ओरश्रीमथु
रेशजीतोचतुर्भुजदर्शनदेतहें। सोव्रजमेंचतुर्भुजस्व
रूपकोंकोनप्रकारविचारिये। तहांकहतहें। पुष्टिकार्यरू
पकीयाचारिप्रकारकीस्वानंददांन १। स्वानंददांनावि
षेंजोप्रतिबंधताकोनिवारन २। स्वसेवा ३ आधिदैवि
कभावपरंपरासंबंध ४। एचारिप्रकारकोंदांनएकका
लावछिन्नचतुर्भुजकेवलतेंकरतहें। तहांस्वानंददांन
तोवनतेंव्रजमेंपधारतहें। तवश्रीमुषमन्दतलावन्यको
पांनकरावतहें। प्रतिवंधकोंनिवारणसो विरहजन्यजो
तापताकोंशमन। स्वसेवासोंसंध्याभोगकोंस्वीकार। आ
धिदैविकभावकोउद्वोधनसो। सोप्रभुजीनेंवनमेंचतु
र्दसरसकीलीलाकीये। सोरसकोनसेंनवप्रकारकें
नवरसएकभक्तिरसचतुर्विधिपुरुषार्थरस। एचतुर्दश
रसकेंस्थाईभावप्रगटकरिव्रजमेंरहेजोभक्त। तिनवि
षेंउद्बोधककरनों। सोकोंनभांति प्रकुर[illegible]वनतेंव्र
जमेंपधारे। सोजवभक्तनकोंदर्शनकीप्राप्तिभई। इन

नेंहीउद्बोधभयोजोश्रीजमप्रभुजीनें या प्रकारकी चतुर्दश
लीलावनमें कीनी । यहबोध श्रीमुख देषतमात्र हीमेंभयो
यहचतुर्दसरसकेंस्याईभावकोंनसे । सोकहतहें । नवर
सकेस्याईभावनव । ताको सोक । रतिहास्य असोकस्य क्रोधो
त्साहोभयतथा । जुगुप्सा विस्मय शांति स्याईभावरतिहें । अ
रुचतुर्विधिपुरुषार्थकेस्याईभावाप्रकीर्तिता । १ । ओर
भक्तिरसकोंस्याईभावरतिहे । अरु चतुर्विधिपुरुषार्थ
केस्याईभाव अलकहें । अे चारोपुरुषार्थ अलकमेंहेंते
गोरजछुरितकुंतलं इति । या प्रकार चतुर्दसरसस्याईभा
वजांनिये । याभांतिकी ऊपरकही जो रीतिक्रिया । ताकेंबो
धब्रजस्यलभक्तनकों । चतुर्भुजकेवलकरिकें कह्योहें
फिरलीलामें चतुर्भुजकोंयह कामनतें कोई समया आगा
मिलीलाकेमध्यमहाश्रीस्वामिजीकोमान उत्पन्न भयो । ता
कोंप्रभुआपुवहुतभांतिसों समाधानकरिकें । फिरिमनाइ
निकुंजकी ओरकोंलेचले । तासमयलेंश्रमास्त्र मांनकों
अंशजोरह्योहे । तातेंवृंदावनकेलीयेयाकीर्तनकेभाव
तेंचतुर्वाहुकोंकार्यसर्वथैवहे । कीर्तनपाछेंपाछेंललिता
इतनेंसवकार्यएककालावधिनकरनें । तहांचतुर्वाहुकों
कार्यब्रजलीलामेंउपयोगहें । औरजोआयुधधरेंसोमद
नदहनस्वरूपकहावें । तो श्रीमथुरेशजू याक्रमसों आयु
धधरेहें । ताकोंकारणयहहेजो । पुष्टिमार्गमें मदनदहन
रूपत्वे गजराजविहारीलालाएग । इतिवाक्यात । गजग
तिविहारलीलाकरिकें । कांमकोंमर्दनकरतहें । यहसूचना
र्थमदनदहनस्वरूपकीरीतिसों आयुधधरेंहें । सो आयुध
रिवेकें अनुक्रमतथाभावकहतहें । तोचले श्रीहस्तमें

स्वरू. दक्षिण में शंख है । ताकों अवांतर भाव तो असुरगर्व नि
५५ वारत इति । शंखन की धुनि दैत्यन के हृदय कों विदारण
करत हैं । ताही तें आयुध शंख कों आयुध धरे हैं । और मुख्यभा
व तो श्री प्रियाजी की ग्रीवा की आकृति । ऊपर दक्षिण श्रीह
स्त में पद्म है । ताकों आवांतर भाव तो जा पर पद्म हैं धरें । तापर
चौदह भुवन को भार पड़ि के द्रविजाय । भुवनात्मक इति वा
क्याद । ताकों अर्थ यह जो ब्रह्मा कों सृष्टि के करिवे की आं
ग्या भई तब । प्रभु की नाभि तें जो कमल प्रगट भयो हुतो
ताकी चतुर्दश पांखुरीन पर । ब्रह्मा चतुर्दश भुवन कल्पे
जो चौदह भुवन के भार संयुक्त जो कमल । सो जा पर पड़े
सो द्रवि भरे । याही तें पद्म करुणा मुख धरे हैं । और मुख्य भाव
तो श्री प्रियाजू के मुख की आकृति । ऊपर बांम श्री हस्त में ग
दा है । ताकों अवांतर भाव तो [illegible] असुरन कों तेज निवारण क
रत हैं । अस्त्र ते तब गदया इति । और मुख्य भाव तो अव
लंभ रूप प्रियाजी के स्वरूप जो गदा ताकों जो आलेषक
कहत हैं । जो आलिंगन सो श्री कर करि के है । नीचे बांम श्री
हस्त में चक्र है । ताकों आवांतर भाव तो । जा कों मुक्ति देनी है
। ताकों चक्र ही सों मारें । ये ये हता श्चक्र धरेन राजन इ
ति । और मुख्य भाव तो प्रियाजू के कंकण हू तहे । प्रिया
भुजा श्लेष भुजन कंकण कृतिं चक्रक । कंबु कंठ ग्रत भु
जो लीला कमल चेत्र धक । १ । यह ब्याख्या आयुध कों मुख्य
भाव स्वरूप कों प्रमांण कहे । दिवस में श्री प्रियाजू कों वृं
नमें गवन जब होत हैं । तब ये सब पदार्थ । प्रियाजू के अं
ग के भाव कों सूचक । वन में ठाकुर के संग आयुध रूप
करिके रहत हैं । और श्रीमथुरेशजी के पीठक में यह स्वरू

पहें॥ तामेंचारि स्वरूपतो चारयो आयुधके स्वरूपमूर्त्ति
वंतभगवद्भावाविष्टफलरूपहें॥ और दोय स्वरूपतो
मर्यादापुष्टिकेंभेदकरिकें रुद्धेह स्वरूपईस्वर्यादिषट्
येषड्धर्मसंयुक्त॥ धर्मी श्रीमत्प्रभुचरणजी आपुविराजतहें
और इतरो स्वरूप सोतो प्रत्यक्ष प्रकासनहीं सोआपुअप
तें स्वरूपमेंही लीलाविशिष्टहें॥ याहीतें पीठकगोलतहें॥
जो इतरो स्वरूपमेंही लीलाविशिष्टहें॥ याहीतें पीठगो
लहें जो दोषरो स्वरूप प्रत्यक्षनहीं॥ और मोओढनी
मुकटपर ओढतहें॥ सोइतरे स्वरूपकेंभावतें ओढतहें
अब श्रीविट्ठलेशरायजीके स्वरूपकों भावलिख्यते॥
फलप्रकरणके द्वितीय अध्यायकी लीलाप्रगट और प्र
करणकी लीला तो गुप्तहें॥ द्वितीय अध्यायमें जो व्रजभ
क्तनको विरहभावकों हरनसमरके अंतर्ध्यानपधारे॥
सो श्रीविट्ठलेशरायजीकोस्वरूप॥ पुनःपुलिनमाग
सुकालिंद्याः कृष्णभावना॥ इतिवाक्यात्॥ यहकहिके
योंजनायेहें॥ जब श्रीठाकुरजी अंतर्ध्यानपधारे
तबसबभक्त ढूंढत ढूंढत एकप्रियाजूकेसंगपधारे
हते॥ सोतिनिसोंमिलीकें फेरिश्रीयमुनांजीकेपुलि
नपर आये॥ तब श्रीकालिंदीजीकेस्वरूपकोदर्सनक
राये॥ तबभक्तनकोंभगवद्भावकीस्फुर्त्तिभई॥ काहे
तेंजो ठाकुरकों और श्रीयमुनांजीकों और श्रीमहाप्र
भुजीको स्वरूप एकभावरूपहे॥ तातें श्रीयमुनांजीको
दर्सनकरतबेंम भगवद्भावकीस्फुर्त्तिहोयगई॥ भग
वान् सख्यभावहृदिकरोतिहि॥ तथैव यमुनास्वामि
नस्पनात् दर्शनात्॥ इतिच॥ श्रीविट्ठलरायजीकेस्व

पासदूसरो स्वरूप है ॥ श्रीयमुनांजीमें स्नान करित श्रीगु
स्वरू: ५६ सांईजी रूपप धारे ॥ याहीतें श्री विठ्ठलेशरायजी स्वरूप
गौरस्याम स्वरूप याकों भावनय ॥ अथ मनुष्य श्रीस्वामि
नीजी विषें आसक्तिभर करि बतदुवता स्याम गौर तो हते
ई कोर मोहित भए श्रीयमुना जीको न गावज्ञा वा विषदेखि
कें मोहित भये ॥ तापाछें उनहीकें रसासक्त भावा विषजो क
मरनदलन नेत्र तिनके कटाक्ष करिकें स्यामता रूप स्वरूप
विषें प्रवेशान होत हें ॥ ताहीतें गौर स्याम है ॥ स्वामिनी भाव
गौरस्य स्वस्वरूपं प्रपतस्यतः ॥ कटाक्षै विठ्ठलेश स्यस्या
मतां चिन्तितं बाधु ॥ १ इति ॥ फिरि दूसरो भाव यह जो शृंगार
रसात्मक भगवत्स्वरूप दोय प्रकारको ॥ एक संयोगा
त्मक ॥ एक विप्रयोगात्मक ॥ ऐसें दोय भेद करिकें यह जना
वत हें ॥ जो साक्षात् ब्रह्मको विरुद्ध धर्माश्रय है ॥ कोऊको
ऊ भाति इहां संयोग ॥ तहां वियोग कैसो ॥ ओर इहां विरहत
हां संयोग कैसो ॥ यह पूर्वपक्ष नाशवेकेलीये ॥ जो विरुद्ध ध
र्माश्रयकें अंगीकृत है ॥ शृंगाररस स्वरूपमें संयोग ठ
द्भनकों अंगीकार कीये हें ॥ सो उन भावनकी स्थिति कृ
गौरस्याम हें स्थिति ॥ रसस्यादि विधि स्यापि स्वरूपे बोधयन्
एक्यं विरुद्धमत्वात् गौरस्याम कृपानिधि ॥ १ ॥ अरु आप
तौ रसपर सपरवस हें ताहीतें कटिभाग पर होऊ श्री ह
स्त हें समपादांबुज स्तम्भ कटिलग्न भुजद्वये ॥ किरी
टनं लसवक्कं विठ्ठलेश महं भजे ॥ जो रस परवस हो
य ॥ सो चकित अवस्था सो उभय हस्त कटिपर धरिकें ठा
ढे हें ॥ अत एक वाम श्रीहस्त में शंख अंबहे ॥ ताको अ
भिप्राय यह हे जो ॥ शंखकी धुनि करिकें जगावत हें श्री

भगवद्स्वरूपविरुद्धधर्माश्रयत्वे ।। और भक्तवृंदमें जे नि
जांगीकृतभक्त हें जिनकों सगलेप धारे ।। जिनकों ऊभयभाव
जो संयोगरस विरह ।। ताकरिकें ये गोरस्यां महें ।। और सब भक्त वि
षें रसपरवसता ज्ञापनार्थ एक चरणारविंदमें आभरण हें
और एक समें नहीं ।। अथ श्रीद्वारिकानाथजीके स्वरूपको वि
चार लिख्यते ।। प्रमेय प्रकरणके समस्त माधुर्यकी लीला प्र
गट हें ।। और प्रकरणकी लीला तो गुप्त हें ।। तास्वरूपसों प्र
मेयबल करिकें वेनुनाद करि ।। भक्तनके हृदयमें परंपरा
अधरसुधारसको स्थापन कीयो ।। सो स्वरूप श्रीद्वारिका
धीशको अतएव व्रजमें चतुर्भुज स्वरूपमें प्रमेय प्रकटावें
जो लीलार्थ अंगीकार कीये ।। सो कोंभांति ।। कोई समय
रहस्यलीला दिषें ।। मुख्य स्वामिनीजू सखीवृंदमें वि
राजत हें ।। तहां एक भगवत्सखी सबी उनके सन्मुख बेठी
हें ।। इतनेहीमें पाछेंतें श्रीप्रभुजी पधारे ।। और स्वकीय
सखीकों समस्यासों वरज्यो जो कछू बोलियो मति ।। और
आप पाछेंतें पधारिकें आपमें दोऊ श्रीहस्तनसों श्रीप्रि
याजूके दोऊ नेत्र मीचे ।। तब बोले जो कोन यह ।। तब दूसरें दो
ऊ श्रीहस्तसों वेनुकों बजाये ।। तब प्रियाजूको मन तो विभ्र
ममें पर्यो जो ।। ये श्रीठाकुरजी तो वेनुनाद करत हें ।। तब ए
हमारे नेत्रन मिलनको करत हें ।। और वेनुकूंजनतें तो प्रेमो
न्मत्त होत हें ।। चतुर्भुज व्हेगए ।। इतिवाक्यात ।। अब छत्तीसन
या दोस हरिचरनि कर ।। श्लोक ।। और आयुध धरत हें सो कों
न प्रकार ।। सो या भांतिसों हें जो नीचले श्रीहस्तमें दत्तिणमें
प ग्रहें ।। सो प्रियाजूके आरूप ।। मकुरके हाथतें नेत्रन मि
लन छुडावत हें ।। ऊपरे दत्तिण श्रीहस्तमें गदा हें ।। सो प्रिया
जू ठाकुरके नेत्र मीलनकी अद्भुत लीला देखिकें ।। और वेनु

स्वरू. नांदसवनतें प्रेमप्लुत होयकें आश्लेष करतहें ॥ ऊपरे वाम
५७ श्रीहस्तमें चक्रहें ॥ सोप्रियाजूके कंकणादिकके स्पर्शतें स्त
तस्तूचित होतहें ॥ नीचले वाम श्रीहस्तमें संषहें स्त्रीरूप प्रि
याके आविर्भावरूपहें ॥ याहीतें उनकी पीठिक चोषूंटीहेजो
मूर्त्तिवंत आयुधके भावतें ॥ ठाकुरकूसरे स्वरूप संयुक्तही
विराजतहें यह जाननो ॥ श्रीगोवर्द्धनधरजीको स्वरूपविचा
रनों ॥ पहासाधनप्रकरण लीलाप्रगटहें ॥ और प्रकरणकी
लीला तो युक्तहें ॥ गोवर्द्धनके उधरणार्थको स्वरूप यहीहें
श्रीगोवर्द्धनको श्रीप्रभुजीनें आपतें उठायो नहीं ॥ किंतु ज
व आप उद्धरनकों मन कीये ॥ तव श्रीगोवर्द्धन हरिदासव
र्यहें ॥ जव श्रीप्रभुजी पधारे ॥ तव श्रीप्रभुजीके चितकों अ
भिप्राय जानिकें ॥ आपुही ठाढे भए ॥ दासधर्मत्वात ॥ इति
और छत्रीके आकार ह्वेरहे ॥ तव छत्रकों तोड़ा डी ऊचाहि ॥
यें ॥ याहीके लीयें श्रीप्रभुजीकें डाडीकी ठोर वाम श्रीहस्त ऊ
चो कीये ॥ तव श्रीगोवर्द्धनधरकों स्वरूप चतुर्भुजहें ॥ और ए
क श्रीदक्षिण हस्त ऊर्द्धहें ॥ और वाम एक श्रीहस्तमें शंषहे
ताकों अभिप्राय तो यह जो ॥ सो तो राग धनासरीमें यहप
रकहेजो ॥ महावल कीनेंहो व्रजनाथ ॥ या कीर्त्तनके अभि
प्रायतें जाननो ॥ जव श्रीठाकुरजी अपने एक श्रीहस्तसें
श्रीगोवर्द्धनधारकें वेनुनाद कीये ॥ तव सखस्वरूप प्रेम
प्लुत होइकें सन्मुष पधारे ॥ तव श्रीप्रभुजीनें वामकरतें
दक्षिणकरपर ॥ परवत धरिकें ॥ दोय हस्तसों उनकों आ
श्लेष कीयो ॥ और एक श्रीवाम हस्तमें शंषहें ॥ सो आधिद
संषहें ॥ ताकों आसय यह जो ॥ संषहे सो जलकों तात्वीक
हें ॥ आधिदैविक हें ॥ अपांतत्त्वं दषरमिति वाक्यात ॥ सोजि
तनी दृष्टि भई ॥ तो जलकों आधिदैविक संबंध भयो त

ववहजल भगवद्भोग पयोग्य भयो ॥ ताहीतें आपु संघ कों धा
रण कीये हें ॥ और वाम जो श्रीहस्त में संघ हे ॥ तातें जलकी रा
रीतो सब ताहीं वाम श्रीहस्त में रहत हें ॥ और याही तें इंद्र को अ
पराध क्षमा करि प्रसन्न भये ॥ जो नंदादिक प्रभृति तिन
कों भोगसामग्री समर्पी ॥ तब इंद्र जो जलकी सेवा कीये औ
र अपनों परिकर तें ऊ सब एकत्र कीये ॥ नतु ब्रह्मा नें सें प्रति
ता ध्यायमें ॥ वत्साहरण लीला विषें परिकर भगवान तें
जुदे कीये ॥ तातें अतिही प्रसन्न भये ॥ और इंद्र परकर इंद्रके
कीये तथा जल सेवा ऊ कीये ॥ याहीतें प्रसन्न भए ॥ याके
रिकें यह ज्ञान नों जो श्रीणकुंरजी के एक दक्षिण कर पर श्री
गोवर्द्धन हें ॥ ताहीतें दक्षिण श्रीहस्त कें वारें ॥ और श्रीहस्त दो
यमें अछि स्वाप हें ॥ अब कलुक वाहिर आयो ॥ तब विकरा
लमो दलन दली निवास ॥ एतु एक आधार भयो ॥ ताही भा
तिसों ब्रजभक्त सब ब्रह्मानंद कों अनुभव करि वाहिर आ
ए ॥ तब भजनानंद को अनुभव भयो ॥ तब इनकें अवयवकों
विकास ॥ तथा भगवद् अंग सौम्य आमोद भयो ॥ तब प्रभु
उत्तरीय पर विराजे ॥ और अत्यंत सोभा युक्त दर्शन ऊ दीयो
यह लक्ष्मीनीवास ॥ अब श्रीगोकुलचंद्रमाजी के स्वरूप
कों विचार लिख्यते ॥ फल प्रकरण कें चतुर्थाध्याय की लीला
प्रगट हे और आरत्र करण की लीला तो गुप्त हें ॥ रासक्री
डा में अंतर्ध्यान पाछें फेरि पधारे ॥ साक्षात मन्मथ मन्म
थ सो श्रीगोकुलचंद्रमाजी को स्वरूप हें ॥ अपने स्वरू
प मात्र करि कें कंदर्पजीते ॥ सालिकुल कमल कुलनाजि
तनीजाकार मात्रतो जगाति ॥ प्रकटाति गूढ रसं भर जितो
भयत्कुसुमशर कीर्ति ॥ १ इति ॥ त्रिभंगललित ग्रंथ हे सो
इनही स्वरूप कों वर्णन हें ॥ इनही को त्रिभंगी स्वरूप हे

स्वरू: सोतीनित्र्यंगवक्रहें ॥ पद कटि ग्रीवा ॥ येतीनित्र्यंगहें
५८ तहांवामचरणकोंस्थापन सोपुष्टिकोंस्थापनहें ॥ दक्षिण
चरणउन्नतहें ॥ सोतोमर्यादाकोंउल्लंघनहें ॥ याकिंचित ॥ द
क्षिणपदकेअंगुलिनकीस्थितिहें ॥ ताकोंआसययहहेजो
रंचकमर्यादाकीस्थितिहें ॥ सोपुष्टिकोंआसयकरतहें
पुष्टिभक्तिस्थितिरीकत्युमर्यादाचततयौदाल्सिता ॥ इतिम
व्यात् ॥ कटितथाग्रीवानमितयातेहेजोआरमात्रनमेंर
सस्थापनकरनोंहोय ॥ तवभरितपात्रनत्रितहोय ॥ तव
श्रीरपात्रमेंआवे ॥ रसभरितपात्रंनामितमन्मंत्रतंरसकु
त इति ॥ औरजोवेंतुसर्वदापासहीरहतहें ॥ ताकोंआस
ययहहेजोवेंएकेरंधूसो ॥ षट्धर्मसंयुक्तधर्मीकीस्थिति
हें ॥ दक्षिणहस्तकेतर्जनीऔरअंगुष्टकोंस्पर्शहें ॥ और
मध्यमाअनामिकाकनिष्ठायेउर्द्धहें ॥ तासोंभक्तनकोंअ
भयकरतहें ॥ भक्तनविशेषनिष्ठकोंउत्तर ॥ भक्तनकें
भजनकीस्वरूपकोहेजोतुंमऐसोभजनकीयेजो ॥ वहो
तत्कालपर्यंतभजनकरीयेतोऊपारनआवें
नपारवेहूंइति ॥ औरयहतर्जनीयअंगुष्टकोंस्पर्श ॥ और
येतीनित्र्यंगुरीउन्नतहें ॥ सोयहतीनतत्त्वकोभावहें ॥ यतोह
स्तस्ततोदृष्टिः ॥ यतोदृष्टिस्ततोमनः ॥ यतोमनःस्ततोभावो
यतोभावोस्ततोरसः ॥ १ ॥ यहनृत्यकेसमयकोस्वरूपहें
याहीतेंरासोत्सवकोंप्रकारयहांईजांनिये ॥ वेंणुस्थितिसे
ऊर्ध्वहस्तकेंअवयवमध्यइष्टिहोय ॥ दक्षिणदिसिहोय
भूमिपरकृपाअवलोकनहें ॥ सोदक्षिणकीओरदृष्टिते
स्त्रीपुरुषसवनकोभावबोधकहें ॥ देवानांऊर्द्धेत्र्यध
स्थिरस्वांक्षामधूरा वृत देवस्त्रीणां स्त्रीनां पुरुषाणांच
दक्षिणः समयासवैसां चेतनअचेतनानां ॥ १ ॥ याभाति

सोवेंणुनाद को प्रकार ॥ पंचदशछिद्रसंयुक्त हे ॥ जेसें वेंणुनाद
पंचदशछिद्रसंयुक्त हें ॥ तेसें ही पृथिव्यादिक पंचमहाभूत
की तन्मात्रा अत्यंत प्रिय हें ॥ ताको स्वरूप तेज की तन्मा
त्रा अत्यंत प्रिय हें ॥ ताको स्वरूप ॥ तेज की तन्मात्रा रूप सो
नील प्रिय हें ॥ शृंगाररूपत्वात् ॥ आप की तन्मात्रा रस सो न
वनीत को ॥ सुधासंबंधत्वात् ॥ पृथ्वी की तन्मात्रा गंध सो
तुलसी को दिव्यगंधत्वात् ॥ वायु की तन्मात्रा स्पर्श सो
स्त्री को ॥ सुधाधारत्वात् ॥ आकास की तन्मात्रा ॥ शब्द
सो वेणु को ॥ प्रथम सुधाधारत्वात् ॥ स्वरूप में मलकछ
को स्वीकार ॥ सो गायन को आच्छादन ॥ सुधादानार्थ ॥ बर्हि
णस्तबकधातुपलाशैर्बद्धमल्लपरिबर्हविडंबः ॥ कर्हिचि
त्सबल आलि स गोपैर्गाः समाह्वयति यत्र मुकुंदः ॥ १ ॥
यह श्लोक कि कवे शादेलिकें नहीं नदीयन कों अस्तंभ भई
तहिं भग्नगत यह शारि तोये ॥ सौरभ की ठौर ॥ वेणुनाद करत हें ॥ सो वामा
श्रित होय कें करत हें ॥ ताही तें ह्वलित श्री हस्त में वामभ्रू वंदन हीं
चो की परठट हें ॥ श्री रसौ अदिसत किया हें ॥ सो कटि ताई
कों परस कीये हें ॥ सो स्मित किया नहीं किंतु ॥ आलंबन अरु
उद्दीपन ॥ दोय विभाव जो दोऊ ओर के स्वरूप सो हें ॥ किंतु ल
लित त्रिभंगी ग्रंथ के मंगलाचरण में आत्मनिवेदन कर्यो
हें ॥ ताको आसय यह हे जो ॥ श्रीमदाचार्यजी को श्रीगोकु
लमें ब्रह्मसंबंध की आज्ञा भई ॥ सो याही स्वरूप करिकें
हें ॥ नमः पितृपदांभोजरेणुभ्यो यन्निवेदनात् ॥ अस्मत्कुल
निःकलंकं श्रीकृष्णेनात्मसात्कृतं ॥ १ ॥ श्रीमधुराष्टक
को श्रीआगम्य याही स्वरूप ने हीं ॥ पधारत हीं ब्रह्मसंबंध की
आज्ञा कीये ॥ श्रीमुख कों दर्सन पहलें ही भयो ॥ ताते ताते म
धुराधिपति रूप ये ही स्वरूप जानिये ॥ अथ श्री मदनमोह

नजीकेस्वरूपकोविचारलिख्यते॥ फलप्रकरणकेप्रथ
माध्यायकीलीलाप्रगटहे॥ औरप्रमेकरणकीलीलातो
गुप्तहे॥ वेनुनादकरिभक्तनकोआकर्षणकीये॥ तापाछे
भक्तनप्रतिजोएगमनवावयकहे॥ सोयाहीस्वरूपक
रिकेंहे॥ दक्षणश्रीहस्तकीअंगुरीमध्यमातथाअनामिका
इनदोऊनसोंकरतलकोस्पर्शहें॥ जोइनकेंगमनकोंआ
दरकरिकें॥ समग्रकरतलकोंदर्सनकरवावतेतो॥ तोभ
क्तनकोंस्वास्थ्यहोतो॥ जोसमग्रकरतलकोंदर्सनिहेंसो
अभयसूचकहें॥ परंतुकरतलकोंतोदोऊअंगुरीयन
तेंसंकोचदेख्यो॥ तबतोयाभांतिकेएसेजवाक्यसुनिकें
भक्तनकोंएकवेरतोमहाचिंताभई॥ जोमहाप्रभुत्यागकी
मे॥ फिरिजववाक्यविचारे॥ तबमहाभागावाक्यसुनिकें
जांन्योंहमारोआदरतोप्रभुकेमनमेंहे॥ पुनःसुमध्यमाय
हपदविचारिकेंनिश्चयमेसोजो॥ भक्तनकोभावदेखिकेंमो
हिततोभए॥ फिरिश्रीमददेखतही॥ सघूर्णश्रीअंगकोंगौ
रदेखे॥ तबतन्मयताकोनिश्चयभईजोइनरेस्वरूपकेअंग
वर्णकोअंगीकारतोकीयोहेजो॥ हमारेविषेआपकोतन्म
यताहेजो॥ तापरश्रीचरणारविंदमेंपादुकाकोंदर्शननहीं
जोवस्तुअंतरालनहोय॥ अंतरायहोयताकोस्पर्शमानहें
जेसेंमोजाऔरअंगराग॥ चरणारविंदसोंलगिरहतहें॥ वह
चरणारविंदकोंस्पर्शकरीये॥ तबयहस्पर्शअंतरालनहीं
अंतरायहें॥ तातेंवस्तुस्पर्शचंदनमोजाकोहोतहेंपरिव
हस्पर्शसाक्षात्चरणारविंदहीकोहे॥ काहेतेंजोवीचमेंअ
वकाशनाहीं॥ औरपादुकातोअंतरालहे॥ बीचमेंअवका
सहें॥ तातेंयहवाक्यव्यंगहे॥ व्यंगसोजाकेदोहोरेअर्थ॥ आद
रअनादरमिश्रितसोव्यंगकहियें॥ तातेंयहालिख्यामयाजो

जैसें वाक्य अंगहें ॥ पर्यवसाय तें सें न करेंगे ॥ काहेतें जो यद्य
पि वाक्य मर्यादा हे ॥ परंतु चरणारविंदको स्पर्श भयो ॥ सो चर
णारविंद तो साधन भक्तिरूप हे ॥ तातें मर्यादा जब भक्ति संव
लित न होइ तो भक्ति स्वीकार न करें ॥ और भगवद्वाक्य श्रीअं
ग के सुखद होंहि ॥ फेरि दक्षिण चरणारविंद की अंगुली को
स्पर्श मात्र पादुका को हे ॥ ऐसे चरणारविंद के दर्शन तें दास्य
की स्फुर्ति भई ॥ जो मर्यादा चरण को उत्थापन हे ॥ तातें पुष्टि
अंगीकृत जो हम ॥ सो हमारे दास्य को अंगीकार करेंगे त्याग
न न करेंगे ॥ ता पाछें फल भक्ति रूप श्रीमुख देख ताको दर्श
न भयो ॥ तब दास्य रूप जो धर्म ॥ ताके आगें चतुर्विधि सो मु
क्ति सो तुच्छ हे ॥ यह निश्चय हें ॥ पहलें निश्चय भयो जो काहेतें अ
लौकिक चतुर्विधि मुक्ति को श्रीमुख में दर्सन भयो सो कोंन
भांति ॥ अलकावृत श्रीमुख विलोकि के यह निश्चय भयो जो सा
रूप्य मुक्ति की प्राप्ति रूप जो अलक सो फल ॥ भक्तिरूप तो
श्रीमुख ताकों आश्रय करि रहे हें ॥ सो सारूप्य मुक्ति करि
कें कहा ॥ और कुंडल को अवलोंन करिकें विचार्यो जो सां
ख्य योग रूप जो कुंडल ताके आश्रय तें साम्प्य मुक्ति क
रिकें कहा ॥ अरु कुंडल ताके आसय तें सायुज्य मुक्ति की प्रा
प्ति हें ॥ यद्यपि ऐसो जो कुंडल ताकों अत्यंत नैकट्य हे ॥ पर
तु फलरूपे भक्ति जो श्रीमुख ताकों आश्रय करि रहे हें ॥ तब
सामीप्य मुक्ति तें कहा ॥ सालोक्य मुक्ति में तो अक्षरानंद को
अनुभव हे ॥ परंतु गल्लस्थल युक्त जो अधरतारस के आ
गें अन्य सब रस तुच्छ हें ॥ तब अक्षरानंद अनुभव रूप जो
सालोक्य मुक्ति तातें कहा ॥ सायुज्य मुक्ति में तो ब्रह्मानंद
में निमग्न होंनो ॥ सो श्रीमुख में हास्य पूर्वक जो अवलोक
न जामें सो साक्षात भक्ति रस हे ॥ ताके आगें ब्रह्मानंद निमग्न

स्वरू ९ ताजो जलैनिमग्नस्य जलपानं च तत्॥ ऐसी जो सायुज्यमु
क्ति सो कैसी॥ वीक्षालकावृतकुंडलश्रीगंडस्थलाधरसु
धाहसितावलोकं॥ दत्ताभयं च भुजदंडयुगं विलोक्य वक्ष
श्रियैकरमणं च भवाम दास्य इति॥ या प्रकार को फलभक्ति
रूप जो श्रीमुख ताके अवलोकनतें॥ या प्रकार की जो मु
क्ति ताको तुच्छ करिकें रासमें॥ तब प्रभु अपि आत्मारामे
हे॥ तो ऊ रमण की॥ आत्मारामोप्यरीरमत् इति॥ या प्रका
र सों श्रीमदनमोहनजी के स्वरूप की भावना करनी॥ अब
स्वरूप को प्रतिरूपन कीये॥ आगे स्वरूप धर्मी ता विषें
श्रवकन की गोदन के वह स्वरूपन को विचार॥ प्रथम श्री
मात्र चरन को निरोध कीये॥ सो लीला कहत हें॥ सो संक
टभंजन लीला हें॥ तीनि महीना के ऐसे औत्थानकली
ला हें॥ पह लीला भी द्वारिका ... के पास के श्री बाल
कृष्णजी के यहां ए लीला प्रगट हे॥ और लीला तो गुप्त हें॥
ता पाछें राजा परीक्षित प्रश्न कीयो॥ सो ऐसे ता के पांच प्रस्त
हें॥ जो महाराज तुम्हारे मुख ... न तो होयगो॥ परंतु तुम्हारे मुखमें
अमृत श्रवत हे॥ ताते ... क्षुधा पिपासा सांति होति हे पग
ई हें॥ सो तुम्हारी वानी केसी हें॥ तातें पांच वस्तु की प्राप्ति हो
ति हें॥ सो कोंनसी पांच वस्तु॥ आर्त्तिनिवृति १॥ दशांति
भूति २ अंतःकरण की शुधि ३ भक्ति ४॥ भगवदीय कों
संग ५॥ सो लीला श्रीशुकदेवजी नें कहि कें॥ यजा कों पांच
वस्तु प्राप्ति करवाई॥ सो पांच स्वरूप कहियत हें॥ श्रीमथु
रानाथजी के पास के श्रीनटवरजी के यहां॥ तृणावर्त के
प्रसंग की लीला प्रगट हें॥ और लीला गुप्त हें॥ वर्ष १ के भ
ए पा लीला कें श्रवनतें आर्त्तिनिवृत्ति होइ॥ श्रीनवनीतप्रि
याजी के पास श्रीबालकृष्णजी॥ तथा श्रीमदनमोहनजी

विराजत हे ॥ तहां जन्मभाव लीला तथा सत्व शुद्ध लीला प्रग
ट हें ॥ और लीला जो गुप्त हें ॥ या लीला के श्रवण तें तृष्णा नि
वृत्त होय ॥ तथा सत्व जो अंतःकरण ताकी सुधि होय ॥ श्री
गोकुलचंद्रमाजी के पास श्री बालकृष्णजी की तथा श्रीम
दनमोहनजी की तहां उलूषल बंधन लीला तथा नलकू
बर मणिग्रीव को उद्धार कीये यह लीला प्रगट हें ॥ और
लीला तो गुप्त हें ॥ या लीला के श्रवण तें भक्ति होय तथा
भगवदीय को संग होय या प्रकार सों बहुत स्वरूप स्वसुख
हृदे के रत्न की भावना करीये ॥ तहां तांई स्वरूप भावना
कहे ॥ जेसी स्वरूप की स्थिति हे ताही भांति प्रकार सों कहे
हें ॥ इति श्री स्वरूप भावना संपूर्णं ॥ अथ लीला भावना
लिख्यते ॥ तिनके स्वरूप की भावना तहां प्रथम धाम भाग
स्य श्री स्वामिनीजी आप बिराजत हें तिनको स्वरूप शृं
गार रस को उद्बोधक हे ॥ सो शृंगार रस स्याम हे ॥ स्याम हिर
ण्य परिधि वनमाल्य बर्ह ॥ या श्लोक की सुबोधनी में श्री
महाप्रभुजीने शृंगार रस को स्वरूप स्याम ॥ और गौर उद्बो
धक ऐसे वर्णन हें ॥ सुधा सुधा हे सो स्त्रीयाकार हें ॥ ता सुधा
के आधाररूप जो श्री वृषभानजी को स्वरूप सो अवतार
लीला में ॥ श्री स्वामिनीजी को प्रादुर्भाव ॥ भगवत्प्रादुर्भाव
के पंचवर्ष पहलें आगम्य हें ॥ सो कीर्तन में कह्यो हे जो ॥ पां
चवरष के स्याम मनोहर सात वरष की बाला ॥ फिरि कह्यो
हे जो ॥ कुंभनदास गिरिधर आवेंगे आगें पेंठे दई और
भगवत्प्रादुर्भाव ॥ पाछें दूसरो उत्सव कयो वीता दिन श्री
स्वामिनीजी को स्वधारूप जो स्वरूप ॥ तिनको प्रादुर्भा
व भयो ॥ सो कीर्तन में कह्यो हे जो ॥ सुखनंदभवन में उम
ग्यो ताते इनो होत री ॥ येरी ऊभा नि केंकी रतनन की या भां

लीला· तिसो । एकवाक्यताहे जोसुधाधारस्वरूपकोप्राग्य श्रृंगा
६१ वताक्रांवते रोयवर्षपहले । औरसुधाविर्भावपाछेमयो
सो सुधासो स्नंगाररसात्मकजो भगवत्स्वरूपतिन कीसार
भूतसुधाहे । ताश्रृंगाररस सरूप स्वामहें । ताहीतेंनीलां
वरआतिप्रियहें । अबदक्षिणभागस्यश्री स्वामिनीजीवि
राजतहें । सो तिनकोस्वरूपकहियतुहें । वहस्वरूपसोश्रृं
गाररसरूपजोभगवत्स्वरूपतिनकोउद्दीपनविभावहें
उद्दीपनआरक्तविवर्णहें । तातेंवहआरक्तस्वरूपहें । गौर
स्वरूपश्रृंगारउद्बोधकहें । आरक्तस्वरूपहें । सोश्रृंगाररसमें
जोरसताकेउद्बोधकहें । अतएवश्रीजीकेपास दांतकेवि
लोंनांवांमभागरहें । औरलालछिलोंनांदक्षिणभागरहें
स्वांमगौरस्वरूपकीजोउभयज्ञानबातिसोंमूर्तिवंतयह
स्वरूपहें । इनकोनांमश्रीचंद्रावलीजी । पातेंजोश्रृंगमेंस्वा
मकलाहें । गौरकलाहें । स्वामगौररसकेउद्बोधकहें । याही
तेंइनकोनांमचंद्रावलीजीहें । एअन्यपूर्वाजोश्रुतिरूपाके
यूथकेप्रकाशकहें । याप्रकारकरिकेंयेस्वांमीनीजुहें
सखीनहीतातेंश्रीजीकेपासविराजतहेंपोदें । अबश्रीस्वां
मिनीजीकोस्वरूपलिखतहें । श्रीयमुनाष्टकमें । श्रीयमु
नांजीकोतुर्यप्रियासोतुर्यप्रियाजोहेताकोअभिप्राययह
हहेजो । श्रीजीनेंकितनेंकभक्तनकोबाललीलामें
अंगीकारकीयो । सोनंदादिकनको । औरकितनेंकभक्त
नकोराजलीलामेंअंगीकारकीयो । सोतोवसुदेवादिकन
कों । औरकितनेकभक्तनकोउभयलीलामेंअंगीकारकी
यो । सोतोकुमारिकानकोसोकोऊभांतिसोंउत्तराईकी
सुबोधिनीजीमेंपुराणांतरसंमतिदेकेलिखीहें । जोकु

मारिकांनकों द्वारिकाविषें कृतनयनहें ॥ अतएव गोपीचंद
नतव भयो ॥ तव कुमारिकांनकों नयन हें ॥ याभांति सों श्री
यमुनाजी में कालिंदी सों श्री द्वारिका में एव तु र्थप्रिया भए
और ब्रजलीला में श्री यमुनाजी कों अंगीकार याभांति सों
उभयलीला विशिष्टतें तुर्यप्रिया हें ॥ और रससरोमकार य
हलो ॥ एक अर्थ यनितसिधाकों ॥ एक स्वरूप अन्य पूर्वाकों ॥ ए
क अनन्यपूर्वाकों नहीं ॥ एक स्वरूप श्री यमुनाजी को ॥ या
प्रकारतें तुर्यप्रिया कहिये ॥ और जे श्री अष्ट जो किक सिद्धि
हें ॥ सो श्री प्रभुजीनें श्री यमुनाजी कों दीनी हें ॥ सो अष्टसि
द्धिकोंन सी ॥ सास्तत्सेवा पयोगि देहमि ॥ त लीलावलो
कनं ॥ २ ॥ तत्सानुभावं ॥ ३ ॥ सर्वात्मभाव ॥ ४ ॥ भगवद्रसीक
रणं ॥ ५ ॥ भगवतास्यर्थज्ञात्वं ॥ ६ ॥ भगवत्प्रियत्वं ॥ ७ ॥ भगवद्रस
पोसकत्वं ॥ ८ ॥ ये अष्टसिद्धि श्रीप्रभुजी को दान की ये हें
यतनो इन हींकों दीनी हें ॥ किंतु श्री यमुना अष्टसिद्धिके दाता
हें ॥ आप श्री यमुनाजी हें ॥ और षटगुणविशिष्टधर्मी हें ॥ य
ह स्वविधि त्वं कहे हें सो ॥ अनंतगुणभूषिते ॥ या में
कह्यो हें ॥ फेरि कहे हें ॥ चिनके जलपानतें जमयाचना तें
होय ॥ और वेणुके संबंधतें तनुनवत्व होय ॥ यातें जल रे
णुहूतें अधिक हें ॥ फल संपादिका हें ॥ और स्मरस्रमजला
णुभि ॥ यह जलरेणुहूतें अधिक हें ॥ श्री यमुनाजी आपि वे
कुंठतें ॥ सूर्यमंडलके वीच होय कलिंद पर्वत पर पधारि श्री
गंगाजी कों अलौकिक दान करि ॥ प्रयागतें क्षीरसमुद्रके
वीच होय ॥ समुद्रके जलनकों स्पर्श न होय ऐसें पधारत हें
अतएव जब ओपित पुरको जहां जात हें ॥ तब मध्य आवत
हें सो यह मीठी रस आई हें ॥ तातें जल भरिवे कूं तब सब को

लीला ऊजलभरिलेतहें॥ क्षारजलकेबीचमिश्रजलकेसेरहे॥
६२ ऐसेजंबूद्वीपआदिसप्तद्वीपजंबू १ लक्ष २ शाल्म ३ लि
कुश ४ क्रौंच ५ शाक ६ पुष्कर ७॥ ओरसप्तसमुद्र क्षा
रोद १ इक्षुरसोद २ सुरोद ३ घृतोद ४ क्षीरोद ५ दधो
द ६ सुधा द ७॥ ऐसेसबनकोभेदनकरिसूर्यमंडलमेंपधारि
केफिरिआपविवेकुंठमेंपधारतहें॥ श्रीगंगाजीमेंभगवच्च
रणस्पर्शतें दर्शनमात्रकरि॥ ब्रह्महत्यादिकपापकनि
वृत्तकोसांमर्थहें॥ इनकेसंगतेंहें॥ अबमुरारिपोप्रियंभा
वुकाभई॥ ताहीतेंश्रीयमुनाजीसकलसिद्धिदाभई॥ याही
तेंअलौकिकआभूषणयुक्तहें॥ तरंगस्तुजनदस्याशिभाव
कृयेईस्वामीजीहेंसखीनहीं॥ गंगाजीकेदर्शनतेंब्रह्मह
त्यादिकपातकनिनिवृत्तिहोय॥ ओरश्रीयमुनाजीकेस्मर
णमात्रतेंपातकमात्र[illegible]होतेहोय॥ हूरस्योपिसपा
पेभ्योमहज्ञोपिविशुच्यते इतिवाक्यात॥ जेसेश्रीवसुदेव
जीकोमल[illegible]हरेहें॥ तेसेहीश्रीकालिंदीजीको
मलभक्तसोंश्रीयमुनाजीहें॥ यहजाननो॥ अबजोश्रीय
मुनाजीकीसेवाकोमनोरथहोयतो॥ इनकेतत्वकेऊपर
वस्त्रविछायभावनासोंपधराय॥ साड़ीचोलीआभरण
पहराय॥ मालासमर्पिभोगधरिये॥ भोगसरायप्रसादआ
पुलीजिये॥ ओरनकोंदीजिये॥ ओरसाड़ीचोलीआभूषण
होयसोतुहांमनोरथहोय॥ तहांश्रीगुसांईजीकेघरमेंभेंटध
रिये॥ याप्रकारकेअधिकारीवेहीहें॥ अवाहमेंबोरिवेनहीं
श्रृंगारचलतननमेंनहोय जबबेठें॥ तबनहींहोइ॥ ओरश्रीय
मुनाजीकेतीनिनामहें॥ तामेंसामजोनामहें॥ ताकोयु
हअर्थः॥ कृष्णवरणाभवेतुस्यामा सांमासोश्रोरवर्षे

कौं अनुभव ताभवत ॥ स्वांमा स्वांमामाधुरमाषिली ॥ अ
व श्रीगोवर्द्धन पर्वत को स्वरूप लिखत हैं ॥ श्रीगोवर्द्धन
कों स्वरूप सो सिद्ध कहत हैं ॥ तहां दंड्ये तासिक्षा सो चरण
और स्पांग शिला सो मुख्य हैं ॥ श्रीगोवर्द्धन भगवत रूप
हैं ॥ सेत्यौस्मी तिभुवन र तिवाक्यात ॥ तातें श्रीगोवर्द्धन
शिला कों सेवन अवश्य करें ॥ जब श्रीगोवर्द्धन सिला
पधरावें ॥ तब श्रीगुसांईजी के बालक के हाथ पधरावें ॥
सिला की जो निछरावर भेट होय ॥ सो श्रीजी कों भेट करें ॥
श्रीगोवर्द्धन के नांव ये ही हैं ॥ श्रीगोवर्द्धन में वस्त्र प्रध
रें नहीं ॥ और भेटहू को प्रमान नहीं ॥ जो वनि आवे सो करें
जहां शालिग्राम विराजत होंय ॥ तहां उत्सव के और जन्म
के समय में शालिग्राम स्नान करें ॥ और श्रीगोवर्द्धन पूजा
के समय श्रीगोवर्द्धन को स्नान करें ॥ और जहां शालि
ग्राम न हों ॥ तहां श्रीगोवर्द्धन शिला ही स्नान करें ॥ आपिवे
कुंड में श्रीगोवर्द्धन रत्न धातुमय हैं ॥ जो भाग्यवंत जीव
कौ सारस्वत कल्प की चूर्णलीला पर दृष्टि होय ॥ ताकों नें
रत्नमय को दर्सन भाषिमय स्वभावादिक को होय ॥ और
श्रीगोवर्द्धन रत्न धातुमय ॥ और श्रीयमुनाजी की दृष्टि सिद्धि
रत्न वधोभय तांटी दर्शन होय ॥ और न कों प्राकृत भौतिक
दर्सन न होय ॥ श्रीगोवर्द्धन ऐसे भगवदीय हैं ॥ जो भगवत्से
वाकरि के प्रभु के साथ जो गाय ॥ गोपतिन हूं कों सन्मान
करत हैं ॥ पानीय सुयवस कंदर कंदमूल ले ॥ श्रीगोवर्द्धन
को दास्य भक्ति सिद्धि ॥ साधन रूपा दास्य ॥ हनूमान को फ
ल रूपा दास्य ॥ श्रीगोवर्द्धन कों याही ते हरिदास वर्यक
हाएं ॥ हनूमान की देहा दास्योपयोगी ॥ और श्रीगोवर्द्धन

लीला को देह॥ तथा देहसंबंधी पदार्थ सब भगवद्रूप या
६४ गीहें॥ कंदरामें छहो रितु सानुकूल हें॥ जा रितु में जैसे सोनि
जमंदिर॥ तथा ज्यों ज्यों मंदिर चाहिये ते सोई हें॥ झरना हें
सो जलपान के योग्य हें॥ कृण हें सो कोमल आस्तरण
पफल हें॥ सो पुलिंदी द्वारा उत्पादन भोग की सामग्री
सिद्धि होत हें॥ भक्त के संग तें पुलिंदी कु भगवदीय भई
पूर्ण पुलिंदी देति॥ ऐसे ऐ भगवदीय हें॥ भक्त कों लक्षण
श्रामी नीं करणोत्व॥ जेसे भी जे कपरा कों स्त्र कों कपधाल
गे तब जो स्त्र को होय सो भी जि जाय॥ पुलिंदी जो भील
नकी स्त्री सो कृष्ण भगवदीय भई॥ फेरि भगवदस्पर्श तें पुल
कित होत हें॥ यह दूसरो भगवदीय कों लक्षण॥ अतए
व तब भगवद्स्पर्श तें पुलकित भए॥ तब श्रीगोवर्द्धन
में चरणविंद॥ तथा मुकुट॥ तथा श्रीहस्त की अंगुरीन कों
दर्शन होत हें॥ सात्विक [illegible]कों लक्षण॥ अथ पश्चव
श्रीव्रज को [illegible]ते॥ वाराहपुराण में पृथ्वी नें वा
राहजी सों पूछ्यो जो सर्वत्र भूमि हे॥ तामें आपकों प्रि
य भूमि कोंन सी॥ तब श्रीवाराहजी प्रयाग कों प्रसंग कहें
जो वे वैकुंठनाथनें जब प्रयाग कों वैकुंठनाथनें तीर्थ
राज कीए॥ तब सब तीर्थ अपनों राजा जानि के प्रयाग के
पास आए॥ तब तीर्थन कों देखि के प्रयागराज बोले जो
तुम इहां हीं रहो॥ मो कों कछू काम हें॥ तातें में श्रीप्रभुजी के
पास होय आऊं॥ इतनें इन सों कहि कें आप वैकुंठलोक
मे जाइ के द्वारपालन कों कही जो में इहां आयो हूं॥ तातें
तुम जाइ के मेरी श्रीप्रभुजी सों विनती करो॥ इतनें में श्री
प्रभुजी आपुही तें दर्शन दीयो॥ और श्रीमुख तें आप बोलें

जो आओ तीर्थराज ॥ तब भयागनें विज्ञप्त करी ॥ जो महा
राज मोको तीर्थराज कीये सो यह जानि के और सब तीर्थ
तो पास आए हें ॥ परंतु व्रज के तीर्थ नहीं आए सो काहे ते
तब श्रीप्रभुजी आप आज्ञा कीये ॥ जो हम तुमकों तीर्थन के
राजा कीये हें ॥ परंतु व्रज के तीर्थ तो नहीं आए सो तो सही
परंतु अपने घर के राजा तो नहीं कीये ॥ ताते यह व्रज तो ह
मारो घर है ॥ या व्रज में द्रुम वल्लि प्रति वेणुधारी हें ॥ और प
त्र पत्र विषे चतुर्भुज स्वरूप हें ॥ इति वाक्यात ॥ फिरि या व्र
ज में भगवद् जन्म भयो ॥ ताते यह व्रज अत्यंत सोभायमान
भयो ॥ और लक्ष्मी हू सेवा के लीये निरंतर व्रज ही को आश्र
य करत हें ॥ जयति तेधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इंदिरा सस्व
दत्र हि इति वाक्यात ॥ व्रज कमलाकार हें ॥ प्रभु जलस्थ
लकी लीला करिवे की इच्छा करत हें ॥ तब वह पखुरी आगे
आय गई ॥ तब ताकों लक्ष पधारे कि धों ॥ ऐसें न होय तो न
दगाम ते ताल वन पधारे ॥ तेहां चतुर्विध पुरुषार्थ दश
रस की लीला करि धेनुकासुरकों प्रसंग सब करि पाछें व्र
ज पधारे ॥ कमल कमलपत्राक्षं पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ त्व
य मांनो नु गैगोपि सायजो व्रज मा व्रजेत ॥ १ ॥ प्रभु सब क
रण सामर्थ्य हें ॥ भक्ति की भावना में आवें ऐसी लीला क
रत हें ॥ व्रज लीलोपयोगी कमलाकार हें ॥ पूर्ण विकास क
होय ॥ संकुचित कहु होइ ॥ एक पंखुरी खुलें होय पखुरी तें ॥ जब प्र
भुजी की जेसी इच्छा होय ॥ तेसें ही होय ॥ व्रज में वसंतादिक की
कु एही भांति रितु नहीं ॥ और भगवद् इच्छा हीतें पुष्पित फ
लित होय ॥ और रितु हें भगवद् दृष्टि नहीं तो पुष्पित फ
लित न होइ ॥ जेसें मधु की रितु वसंत और सरद रितु में प्र

जी·भा· प्रकटत भई ॥ सरदोत्फुल्लमल्लिका ॥ और ब्रजमें व्यापि वैकुं
६५ ठको आविर्भाव है ॥ तातें सब भूमिनतें ब्रज भूमि श्रेष्ठ है ॥ पृ
थ्वी तो गो रूप है जैसें गायके रोम पवित्र है ॥ पर दुग्ध चाहि
यें तब स्तनको आश्रय करें तब मिले ॥ ऐसे पृथ्वीमें जितने
तीर्थ श्रुति प्रतिपादित कहे ॥ तिनतें पाप क्षय होइ ॥ परंतु ज
ब भगवद्प्राप्तिकी जब अपेक्षा होइ ॥ तो ब्रजको आश्रय करे
तब प्राप्ति होइ ॥ श्रुतिकों जब भगवल्लीलाप्राप्तिकों मनोर
थ भयो तब दरसन देके यही वर दीयो ॥ कल्पे सारस्वतं प्राप्य
ब्रजे गोप्यो भविष्यथ ॥ याकरिकें यह निश्चय भयो जो साक्षात
श्रीपुरुषोत्तमकी प्राप्ति सो ब्रजभूमिकें आश्रय विना और
काहूतें नहीं ॥ अब ब्रजमें जो श्रेष्ठ स्थल है ॥ ताको विचार यह
जो ॥ ब्रज तो सब ही श्रेष्ठ है ॥ तामें श्रीगोकुल तथा वृंदावन
विशेष ॥ श्रीगोवर्द्धन दास्यस्थल अरु सखरंग है ॥ वृंदावनेमें गो
कुलेमेंवा तत्रापि मुक्तो सकाचित ॥ इति वाक्यात ॥ श्रीनंदरा
यजीकी लीला श्रीगोकुलमें निकुंजादिक लीला श्रीगोव
र्द्धन मुख्य वृंदावनमें श्रीगोवर्द्धनस्थित उत्साह ॥ श्रीआचार्य
जीको नाम ॥ श्रीगोकुलकृत वास श्रीगुसांईजीको नाम
यातें दोऊ स्थल मुख्यता ॥ श्रीजीके यहांको प्रकार श्रीगो
कुलकी लीला नंदालयमें ॥ प्रांत समयो दाव्रत पुष्टि ॥ याईतें
एकादशीके दिन फलाहार ॥ राजभोगके संग आवे ॥ श्रीनंदरा
यजी एकादसी करत हुते ॥ तातें फलाहार आरोगत है ॥ तब
प्रभु राजभोग आरोगि श्रीनंदरायजीकी गोदमें बैठिके
फलाहार हू आरोगत है ॥ औ श्रीजीके इहां निकुंजलीला है
केवल पुष्टि यातें फलाहार हू नहीं आरोगत ॥ तथा प्रबोध
नीको जागरन हू नहीं ॥ नंदालयमें फलाहार हूहे ॥ और प्र

बोधनीकोजागरनकूंहें भगवत्प्रादुर्भावव्रजविनांनहो
इ सोतोव्रजहीमेंहोइ श्रीगोकुलमेंश्रीगोविंदघाट तथां
ठकुरांनीघाटवरावरहें याकोआसयजो महावनकीहद
मेंगोविंदघाटतहां औररावलकीहदमेंठकुरांनीघाटतांई
श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी सोश्रीगोविंदघाटहीस्नांनकरते
औरश्रीगुसांईजीठकुरांनीघाटस्नांनकरते येदोऊघाटगो
कुलमेंहें श्रीगोकुलनामयाहीतेंहें जोश्रीनंदरायजीम
हावनमेंरहें औरगायनकोषिडकश्रीगोकुलमेंहे श्रीनं
दरायजीकीगायकितनीकहे ताकोप्रमाण सास्त्रनमेंक
ह्योहें जोद्रव्यमेंतोछत्रीसोभागलिखेहें तवद्रव्यकीजोवृ
धिहोतहें सोश्रीनंदरायजीकेहोतहें तरलाषगायहें ता
मेंतेदोयलक्षतोभगवत्प्रीत्यर्थसमर्प्य द्रव्यसुधार्थअ
लंकारसंयुक्तदांनकरतस्य धेनुनांनियुतेप्रदातुविप्र
भ्यः समलंकृतेनियुतदानेयुतेद्विजनस तातें
दोयलक्षसोंअधिकहेंतिनकोषिरकश्रीगोकुलमेंहें यमु
लार्जुनकेवृक्षसोअर्थनोकूकोस्पर्शकरते ऐसेवडेह
तेसोवेगायनिनकेनीचेंवेठती इहांवाललीलाप्रगटहें
प्रोढलीलागुप्तहें औरश्रीवृंदावनयुक्तऔरश्रीगोवर्द्धन
इहांप्रोढलीलाप्रगटहें औरवाललीलागुप्तहें वहवाह्य
पुष्टिअंतमर्यादा सोश्रीजीकेंदहवाह्यमर्यादाअंतपुष्टि
सासातोस्वरूपकेइहां अथअववभावनालिखियतहें
व्रजभक्तनकेभावसोसेवाताकीभावना प्रथमहीमंदि
रकोस्वरूप वेदमेंश्रीजीकोगोलोकधांमकहतहें औरपु
राणनमेंतोगोलोककोव्यापिवैकुंठकहतहें ब्रह्मानंदम
पोलोकोव्यापिवैकुंठसंतक इतिवाक्यात् सोदोऊएअ

ली॰ना॰ क ओर वेद में जाको व्यापि वैकुंठ कहें ॥ ओर पुरांणन में गोलो
६४६ क धाम है ॥ सो रमा वैकुंठ हें ॥ व्यापि वैकुंठ नहीं ॥ ब्रह्म वैवर्त पु
रांण में गोलोक धाम को वर्नन कीये ॥ ओर विरजा नहीं कही
ये सो ॥ तो रमा वैकुंठ को वर्णन हें ॥ मूल गोलोक को नहीं
कावेरी में जो जल हें सो विरजा को जल हें ॥ कावेर जा तो य वैकुं
ठ रंग मंदिर सवासुदेव रंगेश प्रत्यप रमपदं ॥ १ ॥ ओर वेद में
जो गोलोक धाम हें ॥ ओर पुरांणन में व्यापि वैकुंठ कहत हें
सो साक्षात अक्षर ब्रह्म के आधि दैविक स्वरूप हें ॥ सोई आ
धि दैविक ब्रह्म मंदिर ॥ तथा सिंघासन तथा गादी तथा अ
ष्टाचोकी कों स्वरूप जांनिये ॥ मंदिर को ऐसो स्वरूप भाव
ना में लायकें ॥ प्रातःकाल स्नान करि मंदिर में नायवे के सम
य ॥ प्रथम या भांति सों विज्ञप्ति करी हे ॥ नमो नमस्ते ऋष
भाय सात्वतां विदूर काष्ठाय मुहुः कुयोगिनां निरस्त सा
म्यति ॥ सायेन राधसा स्वधामनि ब्रह्मणि रांसिते नमः ॥ १
या भांति सों दंडोत करि श्रीठाकुरजी जगाईये ॥ जेसें मंदिर में
तें ताप क्लेस कों निवारि जल सो करत हें ॥ फेरि पोतना
तें जल की निवृत्ति करत हें ॥ तब श्रीठाकुरजी के बेठिवे के यो
ग्य होत हें ॥ ताही भांति सों अपने हृदय में ॥ राजस तामस सा
त्वक ती निर्गुण हें ॥ तामें तें रज रूपी जो राजस गुण ओर
ताप रूपी जो तामस गुण ताके जल रूपी जो सात्विक गुण
ताकों धोईये ॥ फेरि निर्गुण रूपी जो पोतना तासों जल रूपी सा
त्विक गुण कों पोंछिके डारिये तब वह हृदय निर्गुण अक्षर
ब्रह्म रूप होय ॥ पुरुषोत्तम आनंद रूप सो पधारि आनंद म
यी लीला करें ॥ तातें जब मंदिर में बुहारी करिये ॥ तब यह भा
वना विषें ॥ जो प्रभु भक्त सहित क्रीडा कीये हें उनके चरणार

बिंदकीरजकोंस्पर्शयारजकोंभयोहें ॥ सोरजउडिके मेरीया
देहकोंलगतहें । याभावसोंतमोंगुणकीनिवृत्ति होतहें
फेरिमंदिरवस्त्रसोंपोंछिये । तबसात्विकगुणकीनिवृत्ति
भई ॥ तबशुद्धसत्वनिर्गुणभयो । तबसेवाकीयोग्यताहें
भई ॥ ऐसीनिर्गुणबुधिपूर्वकव्रजभक्तभगवदमंदिरमे
पधारतहें ॥ ऐसोभावराषे । मंदिरकीओरव्रजभक्तनकोंभा
वएकश्रीस्वर्णपुरुषोत्तमविषेंहीहें । ओरकहूंनहीं ॥ जोसा
रस्वतकल्पमें । श्रीनंदरायजीकेंयहांआगप्रभयोहें । ओर
श्रीगुसांईजीनेंजास्वरूपकोंकह्योहें । जानितंपरमंतत्वं
यश्रोरेत्संगनाश्रित ॥ तदन्यक्षितिपेंआकुरासुरास्तानहो
बुधा ॥१॥ इतिवाक्यात् । तातेंमनकूंसबचरणआपुनीबुधि
कोंसंकल्पसबनेरतेंकरि । यहीस्वरूपसोंनिष्ठहोइर
हेहें । भावभावनाकेबीचसगनलासस्वकोंभावकोविचा
रलिख्योहें । परंतुवाकोंविस्तारबहुतहे । तातेंयहांलिख्योना
हीं ॥ देखिवेकोंमनहोयतोश्रीद्वारिकानाथजीकृतग्रं
थमेंदेखनों ॥ अबश्रीगंगाजीकोविचारलिख्यते । श्रीगं
गाजीकोविशेषणपहलेंही । गंगाजीकोभागीरथपधरा
यनाऐ । तबहरिद्वारजोमायापुरीतहांतांईजबपधारे
आगेंआगेंभागीरथशंखधुनिकरतजातहें । पाछेंपाछें
श्रीगंगाजीयाप्रकारसोंपर्वतनकोंविदारणकरतपधा
रतहें । गंगावारिमनोंहारिमुरारिचरणच्युतं । त्रिपुरारि
शिरश्चारीपापहारीपुनांतुनां ॥ पापहारिदुरिताघहारितर
गधारिशैलप्रचारिगिरिराजगुहाविदारीरणत्कारिका
री ॥ हरिपादरजोविहारिगंगापुनांतुपवतत ॥ सुभकारिवा
री ॥१॥ हरिद्वारमेंजहांरिषिध्यानकरतहें । तामेंगंगाजी
केपधारिवेकोंशब्दसुनिकेंक्रोधभयोजो । ऐसीनदीय

जी.भा.
६९
हकोनहें ॥ जोमें यहां ध्यान करत हूं और मेरे ऊपर यह हवे
ढिकें आवत हें तव वे रिषीस्वरको धेकरिके श्रीगंगाजीकों
पीगरे ॥ तव श्रीगंगाजीको सव्रतो रहिगयो तव भागीरथ
जीफिरिदेखें ॥ तव वहां तो श्रीगंगाजीकों दर्सन न भयो तव
भागीरथ जानें जो यह तो इन रिषीस्वरन कों कार्य हें यह जां
निकें भगीरथ ताकुं रिषिस्वरकी स्तुति कीये तव ताकु
रिषिस्वर प्रसन्न भए ॥ तव पूछे जो कहा हें ॥ तव भगीरथ क
हे जो में श्रीगंगाजी को हमारे पितरन के उद्धारार्थ पधरायके
लायो हतो ॥ सो अव दर्शन नहीं होत ॥ तव वाकुं अंतर्दृष्टि दे
षेतो ॥ भीतर ही श्रीगंगाजी विराजत हें ॥ तव ताकुं भगीरथ
सों कह्यो जो घर आई गंगा कों न छोरें ॥ में ही पान कीयो हें ॥ त
व भगीरथ कहे जो मेरे पितरन को उद्धार कैसे होयगो ॥ तव
ताकुं श्री गंगाजी सों पूछे तो [illegible] अपने पितरन के
उद्धारार्थ विनती करत हें ॥ तव श्रीगंगाजी आज्ञा दीये जो
तुमकों क्रोध भयो सो ॥ सरीरे बस्तिए करणतें श्रवणक
रिकें आयो हे ॥ सो तो वाहिर कुं दक्षिण ही करणतें प्रवाह नि
कसेगो ॥ सो वैसाख सुदि सप्तमी के दिन भाग प्रभयो सो
जह्नुके दाहिनें कर्णतें प्रगटे ॥ वैशाखशुक्लस सप्तम्यां कुना
जाह्नवी स्वयं क्रोधात् ॥ ता पुनस्स त्वाकर्णरं आतु दक्षि
णातु ॥१॥ इति वाक्यात् ॥ वैशाख सुदि ७ के दिन हरिद्वार में
प्रगटे पीछें ज्येष्ठ सुदि १०॥ के दिन प्रयाग में श्रीयमुनांजी
कों यह माहात्म्य हतो जो ॥ राजन दर्शनादेव वहत्या पहारिनी
और अव श्रीयमुनांजी के संगतें ॥ मुररिपु जो श्रीकृष्णचंद्र
तिन की प्रियभावुका भई ॥ य याचरणपमजा मुररिपोः
प्रियंभावुका समागमन तो भवत्स कल्लसिद्धिदा सेविता
१ इति वाक्यात् ॥ और अष्टविधैश्वर्य जे अलौकिक ताकों

हांनकीयें ॥ श्रवनो श्री गंगाजी में स्नानभाव पूर्वक सों क
रें ॥ तिनकों श्री कृष्णचंद्र प्यारे लागें यह भगवदीयनकों सां
त ॥ श्री यमुनांजी द्वारा गंगाजी कों भयो ॥ ताही तें स्वेष्ट प्रभु दि
१० कों उत्सव मांनिये तौ श्री आपुनकों भगवदीयत्व होय ॥ अ
व श्री गुरु की सेवा को प्रकार लिखियत हें ॥ एतन्मार्ग के स
व पदार्थ भगवदीयनकों तव सिद्धि होंय ॥ तव गुरु प्रसन्न
होंय ॥ तातें गुरु प्रसन्न होंय सो गुरु कों प्रसन्न राखियें ॥ गु
रु हे सो रुद्र्यांधकार के निवृत्तक हें ॥ गुरुसब्दस्त्वंधकारे
स्यात् रुशब्दस्तन्निवर्त्तकः ॥ अंधकारनिवृत्तत्वात् गुरुरित्य
भिधीयते ॥१ इति वाक्यात् ॥ हरिजन प्रसन्न होंहि तव गुरु र
क्षा करें ॥ तव गुरु अप्रसन्न होंय तव कोऊ रक्षा न करें ॥ या
तें तनुजा वित्तजा सेवा करिकें गुरु कों प्रसन्न करिये ॥ श्लोक
हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्ने
न गुरुमेव प्रसादयेत् ॥१॥ इति वाक्यात् ॥ तहां मुख्य गुरु तो श्री
आचार्यजी तथा श्री गुसांई जी ॥ तातें छें इनकों गुरु सो सव
कुल नहीं हें ॥ श्री कृष्ण एव गुरुः ॥ वा प्रकार करिकें श्री महाप्रभु
जी कों नाम गुरु हें ॥ और श्री गुसांई जी के विषें ॥ श्री महाप्रभु
जी सिंष महात्म्य ॥ तथा श्री सेष महात्म्य इन दोऊनकों स्थाप
न कीयो ॥ याही तें ये गुरु हें ॥ श्री विठ्ठलेश्वरा स्वाश्रित माहात्म्य
स्य प्रकाशन मः ॥ और कुल में तो श्रुस्वकुलं स्वकुलं निःकृत्तं श्री
कृष्णेनात्मसात्कृतं ॥१॥ या वाक्यतें उन कों सव कुल गुरु हें
तथा भगवद्सेवा तथा गुरु सेवा अवश्य करनी ॥ भग
वत्सेवा करे तो व्यापि वैकुंठ की प्राप्ति होय ॥ परंतु भगवत्से
वा तें व्यापि वैकुंठ की प्राप्ति होय ॥ तव गुरु सेवा करें जैसी
हरिसेवा तैसी ही गुरुसेवा ॥ यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे त
था गुरु ॥ गुरुसेवा यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गु

रौ॥ तस्यैव हि कथिता ह्यर्था प्रकाशन्ते महात्मनः॥१॥ प्रभुसे
वा गुरुसेवा ये दोऊ सेवा नित्य ही करनी॥ प्रभुसेवा तो जो जो
पदार्थ मंदिर में अपेक्षित होय सो करनी॥ अब गुरुसेवा रही
सो श्रम बिनां बनि आवे सो उपाय कहत हैं जाको उपदेस नि
वेदन मंत्र कों॥ सो गुरु मुख्य निवेदन मंत्र कों सो ई गुरु मु
ख्य निवेदन मंत्र नलीयो होय॥ तहां तांई तो जितने बारणमं
त्र कौ उपदेश भयो वे ई गुरु मुख्य॥ यह जानि भगवदीय यों
करें॥ जो अपने घर में नित्य खर्च होय सो लिखें॥ पाछें नामें तें
रुपैया एक पीछें एक पैसा अथवा अधेला तथा छदाम एती
निपजत है॥ सो काढि कें जुदी थैली में धरत जैयें॥ और जो कमाई
ये वा कूं में तें याही भांति सो काढियें तो सो पारकूं में पड़ा हो
य॥ और श्रीमहाप्रभुजी कूं प्रसन्नता होय॥ और जु सी भेट थैली
में काढियेसो के राखियें सो [illegible] आवें॥ तब दीलन
होय॥ और जो न काढिये तो जब वैस्नवन के साथ प्रस्ताव में
और कुवेर में लगेगी सब का दीन जाइ॥ याही ते यह नाया स
सुगम मार्ग है॥ और आरती गुरु के हाथ॥ तब उहां सन्मु
ख न भयो॥ तब तन धरे कौ सामर्थ्य कहा कहीयें॥ याही ते मं
दिर में तीनि भेट होत हैं॥ पलना की हटड़ी की॥ पवित्रा की
ये तीनि उत्सव की भेट॥ तथा कीर्तन की भेट॥ ऐसे सब अपने
प्रभु के मंदिर में पहुंचें॥ तो गुरुसेवा॥ तदनंतर भगवद्से
वा ये दोऊ सिद्धि होंय॥ अपने घर में जो श्रीप्रभुजी विराजत
हैं उन में जिनि कों आविर्भाव हैं॥ तिनकी सेवा गुरु द्वारा सि
द्धि भई॥ यह परम महाभाग्य जानि कें कीजियें॥ और कीर्त
न की भेट को प्रमाण राखिये तो कीर्तन चलै॥ अधेली की
र्तन भेट॥ टका एक श्रीजी को पैसा एक श्रीरणछोड़जी कों
पैसा एक टहलीया कों दे सा दीजियें॥ तो कीर्तन चलें ८

हरायश्रावें । यहसेवाचोंपसोंकरे ॥ समर्पणमंत्रलीजियें
तवश्रीजीकीभेटदेकेंपीछेंगुरुकोंभेटकरियें । इहांश्रीरण
छोडजीकीभेटनहीं ॥ उत्सवकीर्त्तनकीभेव ॥ तयापधराव
नीछेंश्रीजीतेंआधीश्रीरणछोडजीकीभेटहे । समर्पणमं
त्रलेतासमेंनहीं ॥ नाममंत्रलेतासमेंश्रीजीकीभेटकोइच्छा
वस्यकनहीगुरुहीकीभेटहें । भेटकोकछुप्रमांननहीं । जो
उत्साहमेंआवेसोईकरें । परंतुइतनोंविचारियेजोजगतमें
वरुतेरेजीवहें । तिनतेंतोहमारोएसोभाग्यहें । जोश्रीम
द्वल्लभाचार्यजीश्रीगुसांईजीजोसाक्षात्ईश्वरपुरुषो
त्तमतिनिकेंशरणिगये ॥ अन्यमार्गमेंगुरुजीव ॥ और
सेवाविभूतकीओरयापुष्टिमार्गमेंतोगुरुस्वश्रीपूर्ण
पुरुषोत्तमओरसेवाहूपुष्टिपुरुषोत्तमकी ॥ ओरसेवा
पयोगीपदार्थरूनिर्दोषहे ॥ समर्पणमंत्ररूजीयोतवआ
पमेंतेंआसुरभावनिवृत्तभयो ॥ ओरनिवेदनमंत्ररूली
यो ॥ तवस्ववधीकेदोषसोइमेतें सर्वदोषकीनिवृत्तिभ
ई । सवपदार्थसेवायोग्यभये । अवएसेशुधेसेवायपयो
ग्यद्रव्यादिपदार्थहें । ताकोंव्यर्थव्ययनकरीये ॥ स्वगुरुद्वारा
पुष्टजोसेव्यस्वरूपहें ॥ सोउहांसेवाकरीयें । तदनंतरजो
जेहांउचितहोय ॥ तहांद्रव्यव्ययकरियेवेहीव्यर्थव्ययन
करीयें । एतनोंविचारिकेंकर्त्तव्यहोयसोकरीये ॥ श्लोक
कःकालःकानिमित्राणिकोदेशः कोव्ययागमौ ॥ कश्चाहंका
चमेंशक्तिरितिचिंत्यमुहुर्मुहुः ॥ १ ॥ प्रथमतोसमयविचा
रियें । १ पाछेंअपनेंहितूविचारियें ॥ २ पाछेंदेशविचारियें
३ पाछेंषरचविचारियें ४ ॥ पीछेंआयपततविचारियें ५
पीछेंअपनोस्वरूपविचारियेंजोमोकोकितनोंअधि
कारभयोहें ॥ ६ पाछेंअपनोंसामर्थ्यविचारीये ७ । येसा

तवार्त्ताविचारकेंव्ययकरेतोकवऊंक्लेशानहोइ श्लो
क॥हरिस्तुसर्वतोरक्षांकरिष्यतिनशंसय॥१॥तवश्री
भगवाननषट्गुणऐश्वर्यसंपन्नहोयकेंरक्षाकरेंहें औ
रभगवदीयभक्तिमाननहीं॥तवकछूचिंतानरही॥भगवा
नभक्तभक्तिवान्॥इतिवाक्यात्॥ऐसेंचितकोंस्थिरराषि
कें सेवाकथासुमिरनकरीयेतोसबवस्तुकीसुधिहोइ
श्रीभगवानकेस्वरूपकोंअनुभवहोय॥श्रीकृष्णजीकें
चरणारविंदकीप्राप्तिहोइ॥तवयाकोंपुष्टिमार्गकीरीति
सोंफलदेकेंअपनीसेवाकरवावेंहें॥इतनेंग्रंथकीस
माप्ति॥इतीश्रीवल्लभाचार्यविरचितसातोस्वरूपनकी
भावनाश्रीरलीलाभावनाप्रभुनकीमार्गकीरीतिभा
वनतासंपूर्ण॥श्रीगुसांईजीकेवचनावार्ताकरीसोजगत
नंदनेंदोहाकरिकेलिखेहें॥दोहा॥श्रीगोवर्द्धनरसिके
चरननकरिदंडोतविठ्ठलनाथसुषपायकेंकहिजग
तनंदउद्योत॥१॥गोस्वामिविठ्ठलेशजूदैवीजीवउधार
कीनेंहेंवचनामृतभयेसुषकार॥२॥सोरहसेसंव
तन्योचोंतीसासनिवार॥भादोंवदिकीद्वादशीवनकों
कीयोविचार॥३॥द्रव्यस्थलभंडारकोंदेषिआपसंकोच
तातेंसेनजुआरतीपाछेंचलेसुरोच॥४॥श्रीगोकुलतेंवि
नेकीयेंश्रीमथुरारहेरात॥प्रातजुभईत्रयोदशीन्हायेश्री
विश्रांत॥५॥चोवेजागरवचनलेरावीनेंमम्मरजाद पा
छेंमनविधिपूर्वककरिसंकल्पचेना॥६॥आरम्भेविस
रातितेंजन्मस्थलपगधारि॥चोवेवोलेपेलहींरुतेस्वर
सुषकार॥७॥चोवेसोंश्रीजीकहेंमतेस्वरसुषकोंरूप
इहांईनेंमलोमानिहेंदिव्यदृष्टिकेंरूप॥८॥पाछेंवो

त्सो योंकह्योमें आऊं तुंम साथ ॥ कांम तुम्हारो एक हे यों
कहि श्री विठ्ठलनाथ ॥ ८ ॥ वचन तुमारो ले न हो सो लीनों
हम आजु ॥ यों कहि चोवे की विदा करी आपु महाराज ॥ १०
पाछें पाउ धारे डराहने मधुवन प्रथम पधारि ॥ तहां लुकर स्नां
न करि रायकल्यान निहारि ॥ ११ ॥ पाछें आए ताल वन संग
समाज विसाल ॥ आय कुंड दरसन कीयो प्रभु बिहारीलाल
॥ १२ ॥ फेरि पधारे कुमुदवन आय कुंड हरि रूप ॥ दरसे गोपीना
थजी श्री कल्यान अनूप ॥ १३ ॥ और चतुर्भुज रायजू दरसिक
रे सुसांत ॥ मधुवन कीने पाक विधि राति रहे सुखसाज १४
पाछें चौदसि के दिनां आए संतन कुंड ॥ दरसे संतन देखि
थल दरसे स्तरज कुंड ॥ १५ ॥ फेरि [illegible] धेसरा आये कुंड
गांधर्व ॥ आप पधारे बहुलावन [illegible] सब ॥ १६ ॥ पा
छें आय गोदान करि दरसे मोहन राय ॥ पाछें आरट पाव
धरि स्नान कीये बहुला [illegible] ॥ कुंड जु राधा कुंड के दरसन
राधाकुंड ॥ पास पधारे स्याम वट आनंद भरे सु त्रभ ॥ १८
आरोगे पकवांन कों कुसमोवरि करि स्नांन ॥ आए नारद कुं
ड में गोधन कीये पयपान ॥ १९ ॥ दार पधारे नायजी दरसे
लीयें प्रसाद ॥ राति रहे भक्तन सहित अद्भुत लीने स्वाद ॥ २०
मावस के दिन आय के करी सेवा विठ्ठलेश ॥ आरंभे दिसदां
हिनी तहां पधारे भेस ॥ २१ ॥ दरसे श्री हरदेवजी देख्यो तीर पछ
के ॥ आये गंगा मांनसी ब्रंह्म कुंड जो सत्क ॥ २२ ॥ दरसे केसोरा
रजी दानी राय निहारि ॥ कुंज संकर्षन आय के गोविंद कुंड प
धारि ॥ २३ ॥ आये कुंड गांधर्व में दरसे गोविंदराइ ॥ कुंड अप्स
रा स्नान करि रुद्र कुंड में आइ ॥ २४ ॥ आप पधारे प्रीति सों

वन. निजमंदिरमेंआइ ॥ लेप्रसादवारात्रिकोवसेगांछोलीजाइ
९७. ॥ २५ भादोंसुदिकीप्रतिपदापिछिरात्रिघरीचारि ॥ तवउठिकें
परमंदिरेलेपजुमेरुभवारि ॥ २६ ॥ फेरिधचाइछांडिकेंवा
ईदिसचलिजात ॥ परवतदाहिनोछोडिकेंजगतनंदविख्या
त ॥ २७ वाएंवदरीनिरखिकेंहोरिहिंसेनादेखि ॥ फिरिइंद्रो
लीआरकेंरुद्रकुंडजलपेखि ॥ २८ ॥ पासिहाथयोंदाहिनेदेख
धारेआप ॥ देखेंप्रभुजीकामवनसेवकसतसुखधाप ॥ २९
चंद्रसेनकायस्थरूतेआलेदरसनकाज ॥ धर्मकुंडडेराकी
यो ॥ करिभोजनसुखसाज ॥ ३० ॥ भादोंसुदिकीदूजकोंधर्मकुं
डमेंन्हाय ॥ कामेंकीपरदछिणाकीनेंअतिसुखपाइ ॥ ३१
विमलकुंडवारिवदनाकुंडकामनानांखि महोदधिरतना
करहिसेतवंधुरघुपेखि ॥ ३२ ॥ [illegible]कालनखिआंखिमीचनी
आपपधारेघोक[illegible]पत्रभीतरेंसुरभीगुफाबि
लोकि ॥ ३३ ॥ सि[illegible]नीदेखिकेंयारकटोराविक्रचो
रासीइहांकुं[illegible]नाकीन ॥ ३४ ॥ पाछेंडेराआयकेंद
रसनकीयेपरतर[illegible]दूजभोजनकरवायकेंभोजनकीयेसु
खद ॥ ३५ ॥ लेरातिउठिप्रातकोंभादोंसुदिकीतीज ॥ भक्तसा
थसवलेइकेंजगतनंदसुखभीज ॥ ३६ ॥ देखिसुनहरएचलें
जहांटेरहिदोहिहरिकुंड ॥ ताहिविलोकियाचोरकोंन्हायतोरि
केंकुंड ॥ ३७ ॥ श्रीवलदेवयाठोरमेंओररेवतीदरसाय ॥ पाछें
श्रीवृखभानपुरआएचितलगाय ॥ ३८ ॥ भांनीषरिकोदे
खिकेंकुंडदोहनीन्हाय ॥ परवतसांकरीषोरकोवीचहोइ
चलिजाय ॥ ३९ ॥ चिकसोलीकेमानपुरमानगढहोइ
दरसदानघाटीचढेंमगवदरूपहीजोइ ॥ ४० ॥ रतनकुंड

कोंपरसतवनोवारीचोवार॥ पीरीपोषरिदेषिकें कुंडलल
न्यघनधार॥ ४१॥ संकेतपधारेआपतववेठेआपसंके
त राजचोंतरादेषिकें तहांविराजेहेत॥ ४२॥ विधुलकुंड
जुकृष्णकोंतहांन्हायेप्रभुआप॥ जसोदानंदजुसवनकों
सबिनदीसरजाय॥ ४३॥ मधवनकुंडजुलक्ष्मकोलेषि
नंदीसरजायँकुंडपसोदान्हाय॥ नंदयसोदासमकुंओरस
क्षवरसाय ४४ पाछेंललिताकुंडकोंवजवारीछविहारि
कुंडदेषितामोंदागोपेस्वरपगधारि॥ ४५॥ उतरेहेंअकरू
रजहांताथलकोंतापिछेंन॥ पाछेपोषरिईसरादेषिवले
सुषलेंन॥ ४६॥ वेरागीवचारीजहांउद्धवगोपिनज्ञान
सोयत्न देषेंकुंडकिरिमदूसदनदसासं॥ ४७॥ तलवि
हारीषडीकदवहोपपधारेनांय॥ याकेनसरभरिपाक
करिभोजनकरिनिजहांध॥ ४८॥ पाछेंआयेषिदवनत
हांवसेवराति॥ नादेंसुषिकीसोंधीकीआगेंचलेप्रभा
त॥ ४९॥ न्हायेनानाकुंडमेंहरिक्रमाकरीआयु॥ नागव
लीकोदानकरि [illegible] सोधायु॥ ५०॥ होइकरहलाठेंकि
रेंतवआरूयजनोप॥ गेयाठकुरनेनमेंअंजनदीनों
तोष॥ ५१॥ नोतनकल्पितरासपलफिरिजमुनांतजी
साय॥ श्रीपसुमतिपीहरजहांतहांपधारेनांय॥ ५२॥ ज
हींहोरमोतीठदेसोमुखारीतास॥ देषिकेतेजुविलास
सवृटतहांपंछीनहींचाल॥ ५३॥ पाछेंगएवहो।निकों
जसोदानंदनआय॥ उठेजुदेषनगाइकोंतहांपथारे
चाइ॥ ५४॥ परासिकुंडवल्लभद्रकोंचरणपहाडीआय
सषचडवधदेषि यत्नवाबेदेहदिसाय॥ ५५॥ आपपधा
रेवछवदनसेऊजाकोनांम॥ अलीषांनएकगीरभाव

वन. छिलजाउसुगतु॥५६॥सनमुषआयआदरदयोखारी
७१ गहीलेचेन॥भक्तमंडलीसहतप्रभुकरभोजनवसेरेन
५७ भादोंसुदिकीपंचमीसोईसुनितप्रात॥रासोलीव
टवछकोनेरुतछोडेजात॥५८॥नंदगांमईसानदिसपा
उधारेनंदघाट॥षेलनवनमेंसोयकेरामघाटलषिपार
५९॥जमुनाषेलेंआगुवलिअक्षयवटतिंहिठोरपक
रेजहांप्रलंबकोंश्रीवलिजखेसुश्रोर॥६०॥कात्यायनी
थलदेषिकेचीरघाटलषिनाथ॥नंदघाटजमुनाउत
रिचलेभक्तलेसाथ॥६१॥देषिभजनकुंडकोमदसु
दनमेंन्हाइ॥पाउधारेभांडीरवनगाउविनोलीजाइ॥६२॥
सकेस्त्रोतभांडीरकोंकु[illegible]देषि परिक्रमाभो
जनकीयेरहीवेलवनप्रभु॥६३॥भादोंसुदिकीछठि
कोंआपुउठेजुपि[illegible]ति॥श्रीजमुनांजीस्नानकरि
त्स्यउदेचलेकोत॥६४॥मानसरोवरहेयकेमानिक
झिल्यानिहारि॥पीपरोलीवटरासथलदेषिपधारेदाइ
६५॥जेसारस्वतकल्पमेंकहेरहेथलछांडि॥फिरिवघरो
नीवधवधवायकेंसीकोंतासु॥६६॥आपपधारेलोह
वनफेरिघाटवंसांउ॥तहांकायेवंदनकरेजमुलार्जुन
धंउ॥६७॥दरसेमथुरानाथजीनंदकूपदलषिरूपमं
रिस्यांमजुरोहिनीसमसमुद्रकूप॥६८॥आएघाट
उत्तरेसत्तश्रीजमुनांजीन्हाय॥श्रीगोकुलपधारेवरए
करिभोजनवेसुषपाय॥६९॥मथुरापधारेरातिकोंआ
परहेचितलाय॥प्रातगएसुवृंदावनेंदसासमेंधहिकां
२॥७०॥भादोंसुदिकीसप्तमीघाटगएअक्रूर॥तहां
देषिभतरोंडकोंकालीदहकोंदर॥७१॥व्रतस्कंधउसाय

नोंमदनतुमोंहनपेषि ॥ ७२ ॥ वेंणुकूपकोंदरसकरिदे
षिजुगोविंदव ॥ फेरिमथुरामेंआयकेंअघहरसुरसेव ॥ ७३ ॥
वनसवसंपूर्णकरे ॥ फेरिश्रीगोकुलआय ॥ दिनग्यारेचो
वीसवनकीनेविठलराय ॥ ७४ ॥ गोस्वांमिविठलेशजुय
हविधिकरीसुषकंद ॥ भक्तसहितवनयात्राकहियो
कविजगानंद ॥ ७५ ॥ पढेसुनेंजोचित्तदेताकोंमंगलहो
य ॥ हेफलयहवनयात्राजगतनंदसेकोइ ॥ ७६ ॥ इतीजग
नंदविरचितांश्रीगुसांईजीनेव्रजकीयात्राकरीसोसं
पूर्ण ॥ अबव्रजकीवस्तुकीमहिमालिख्यते ॥ श्रीवल्ल
भवंसावल्लीओरभक्तनकेनांम ॥ श्रीविठलवनयात्रा
व्रजकीस्तुतिसुधाम ॥ १ ॥ चितलगायकेंपायकेंसु
निकेंलषिकेंनेंन ॥ वरनतव्रजकेनांमसबजगतनंद
कहिवेंन ॥ २ ॥ इनकोगोकुलगांमहेंव्रजचोरासीकोस
ताकोवरननकरतहेंजगानंदसुषरास ॥ ३ ॥ गोकुल
अतिदेख्योरासिकश्रीगोकुलकेमांह ॥ जोकुलचितदीनों
इहांसोकुलकबहुनांह ॥ ४ ॥ रतनजटितमनिगन
षचितचोकगलीसबघाट ॥ अतिआनंदनरनारिजहां
श्रीठकुरांनीघाट ॥ ५ ॥ देषेंहोतआनंदवहुतचिंतनहो
तउचाट ॥ विनअनुभवनहींजानियेंजेमजसोदाघाट ॥ ६ ॥
श्रीजसुमतिनिजलालकोंवेंधेकांनअनूप ॥ तादिन
तेंसुषराषियेंकरणवेधकोंकूप ॥ ७ ॥ वरनचंदसुसि
कातअतिरतिवढितलषिवाट ॥ सोभितअद्भुतअगपु
विगोविंदगोविंदघाट ॥ ८ ॥ साधुअराध्योसोहियेंश्रीमाधो
सुषवाट ॥ जहांपरमेस्वरपाइयेंलखिजनरेस्वरघाट ॥ ९ ॥
श्रीप्रभुजीनितवेठहींछोंकरतरमेंआर ॥ डाईरवाभक्त

कोसालियां मदिषाइ ॥ १० ॥ गाय चरावत गोप सव उपह
रप्पावत नीर ॥ सोभा अद्भुत देषियें गौ घाट पर भीर ॥ ११ ॥
श्री वल्लभ श्री विठ्ठलनाथ के दरसकाज अनुमान श्री
शिव गोकुल में रहे कियो शिवालो थांन ॥ १२ ॥ गली गली
सोहे अली भली भांति लषि लेऊ ॥ फूल फली मनकां
मनां करि गोकुल सो नेऊ ॥ १३ ॥ मथुरा तें आवत जवें ब्रज
वासी अकुलाय ॥ तल पीवत विसराम सो गोप कूप सर
साय ॥ १४ ॥ रमणरेत सुष देत है केतक वरनों ताहि
ग्वाल हेत भरि लेत हरि वालि समेत हरिनाइ ॥ १५ ॥ आ
ई थन विषलाय केंलीने नंदकुमार ॥ ताहि पट किये
पालन्द की यो पूतना पार ॥ १६ ॥ ग्वालन सहित गोपाल जु
मांडटी षातन चंद ॥ तीनि लोक सु मातिल षे भयो घाट
ब्रह्मांड ॥ १७ ॥ नग पावन सावन [illegible] रस गावत डोलत
गोप ॥ मन भावन [illegible] महावन ओप ॥ १८ ॥
वेठक श्री नंदराय [illegible] नरूप ॥ सोभित ब्रज
वासी सवे [illegible] कूप ॥ १९ ॥ पेंडा इनको देषियें मे
डा षेत सुभेव ॥ [illegible]लीये रेवती रेंडा में वलदेव ॥ २० ॥ म
नोंगरा देही देषियें स्वच्छ हीस वसेव ॥ सोभित वंदी पर म ह
चिन्नोरस्यामंदी देवि ॥ २१ ॥ जहा वसत व्रषभान जू श्री
राधा चित चाय ॥ गोअलका नालि देषियें ज्योरा वुलि सर
साइ ॥ २२ ॥ श्री मथुरा मथुरा कहें वढत हिये आनंद
भक्त हेत सुष देत हरि ब्रजकी पूरनचंद ॥ २३ ॥ सुरन
र मुनि गंधर्व सव दरस करत हैं आय ॥ नील जलद त
न पीत पट सोभित केशोराय ॥ २४ ॥ मन कामना पूरन
करन श्री मथुरा प्रतिपाल ॥ गुन सहित अतिराज हीं